

ઘૂકાત્મક

બાળ વિજ્ઞાન પત્રિકા

એક છોટા-સા લડુકા થા મૈં જિન દિનો
એક મેલે મેં પહુંચા હુમકતા હુआ

મૂલ્ય ₹ 50

1

हर्षवर्धन
चित्र: शुभम लखेरा

वादा

अमलतास, ओ अमलतास!
क्या करते हो यह वादा
सड़क बुहारती काकी पर
बरसाओगे फूल ज्यादा



इस बार

वादा - हर्षवर्धन	2
आसमान में साँप - जितेश शेल्के	4
तुम भी बनाओ - होलोग्राम - प्रभाकर डबराल	6
अपराधों के बारे में कीड़े... - विनीशिअस डा कॉस्टा-सिल्वा, कैरीना मारा डि सूजा व साथी	8
चित्रपहली	12
आइसक्रीम - मयूख घोष	14
भूलभुलैया	20
नर पते - बिल्ली के बच्चे - शाहिमा	21
मेहमान जो कभी गर ही नहीं - भाग 11 - आर एस रेशू राज, र पी माधवन व साथी	24
मेरे जीवन का सबसे कठिन... - तन्वी श्रीकृष्ण काले	26
क्यों-क्यों	28
भूत - शशि सबलोक	32
माथापच्ची	34
मेरा पत्ना	36
तुम भी जानो	43
सक छोटा-सा लड़का था मैं... - इन्हे इंशा	44

चक्मक

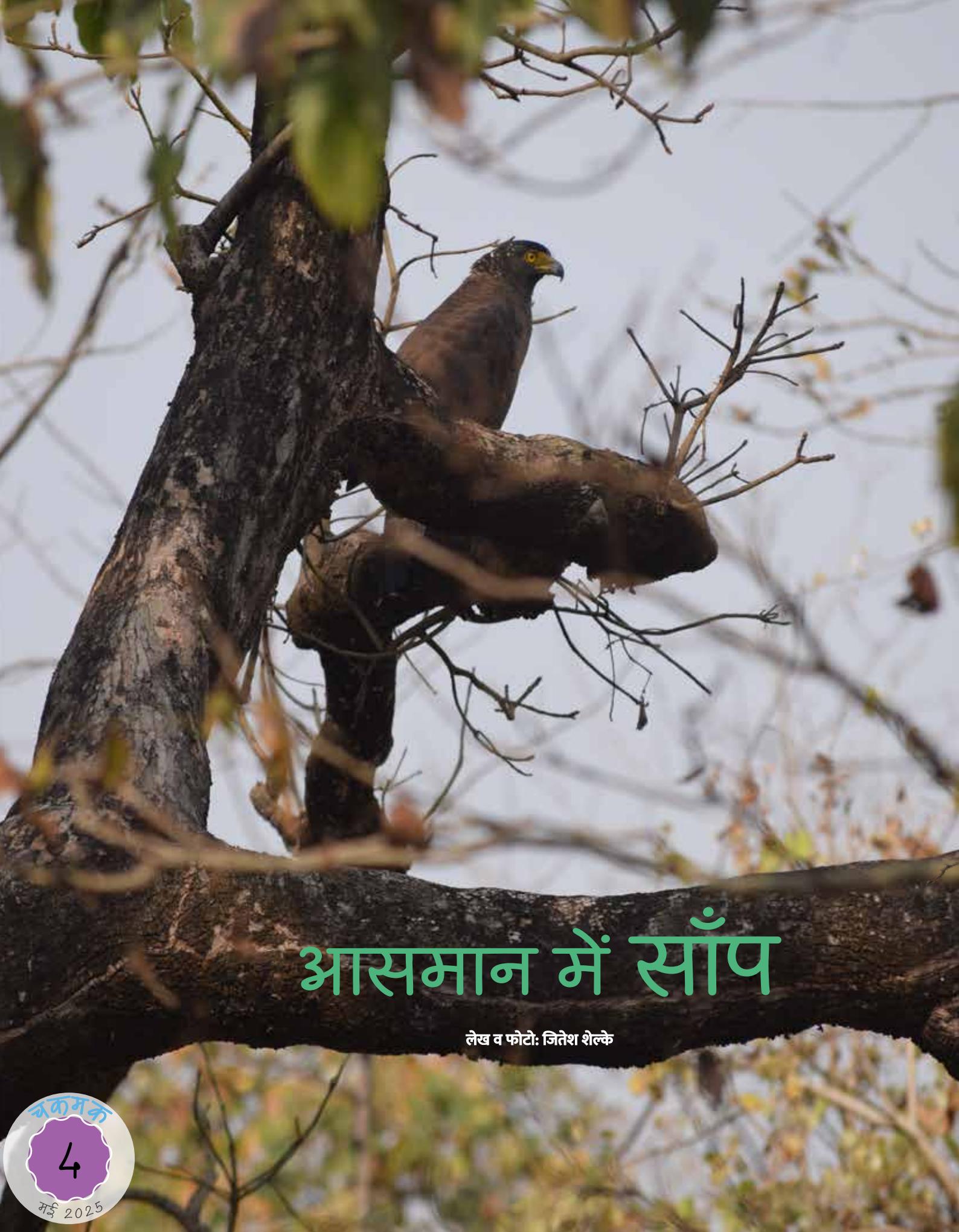
आवरण चित्र: हबीब अली

सम्पादक	डिजाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	सलाहकार
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक
सुशील जोशी	वितरण
उमा सुधीर	झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क (रजिस्टर्ड डाक रहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/बैंक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - रेटेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmак@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmак-magazine>



आसमान में सॉप

लेख व फोटो: जितेश शेल्के

बकमक

4

मई 2025

दृश्य रोमांच से भरा और रोंगटे खड़े कर देने वाला था। वह अपने पंजों में लगभग ढाई से तीन फुट लम्बा साँप दबोचे हुए था। और अपने दोनों पंजों से उस साँप के फुर्तीले शरीर पर काबू पाने की जिद में लगा हुआ था। वह अपनी पैनी चोंच से उसके सर पर वार कर रहा था। जंग एक तरफा लग रही थी। आधी जंग शायद उस वक्त लड़ी गई होगी जब जमीन से वह शिकारी उसे उठाकर टहनी पर ले आया।

साँप अब अधमरी अवस्था में था। उसकी जद्दोजहद फिर भी जारी थी। वह किसी तरह आज्ञाद होना चाह रहा था। लेकिन शिकारी की पकड़ काफी मजबूत थी। साँप उसके पैरों पर हमला करने की कोशिश कर रहा था। पर उसके पैर तो मानो हमले को झेलने के लिए ही बने हुए थे। वे थोड़े मोटे और खुरदुरे नज़र आ रहे थे। साँप ज़हरीला था या नहीं यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन इतना तो है कि साँप अगर ज़हरीला होता और हमला सटीक बैठता तो शायद शिकारी का ही शिकार हो जाता।

कुछ समय बाद उस शिकारी की पैनी नज़र जैसे ही हम पर पड़ी वह उस साँप को उठाकर उड़ने लगा। वह हमारे डर से नहीं बल्कि हमसे चिढ़कर उड़ रहा था। शायद इस वजह से कि हम उसे उसके शिकार का आनन्द उठाने नहीं दे रहे थे। उसके नुकीले नाखून उस साँप के शरीर में घाव कर रहे थे। अब वह साँप झूले की तरह आसमान में झूल रहा था, ऐसा झूला शायद ही कोई झूलना चाहे।



अब तुम्हारे कौतूहल भरे दिमाग में यह सवाल उछालें खा रहा होगा कि ऐसा कौन-सा शिकारी है जो साँप पर हमला करने की जुरत करता है। तो तुम्हें बता दूँ कि यह एक पंछी है, जिसका नाम है 'क्रेस्टेड सेपेन्ट ईगल'। जैसा नाम वैसा ही काम। पेंच टाइगर रिंजर्स में देखा गया यह दृश्य मुझे हमेशा याद रहेगा। तुम भी कभी जाओ तो शायद तुम्हें भी रोमांच से भरे ऐसे कुछ दृश्य नज़र आ जाएँ।

वैसे जाते-जाते
तुमसे पूछना
चाहूँगा कि क्या
तुम ऐसे जानवरों
की सूची बना
सकते हो, जो
साँपों का शिकार
कर उन्हें अपना
भोजन बनाते हैं?



तुम्ही बनाओ

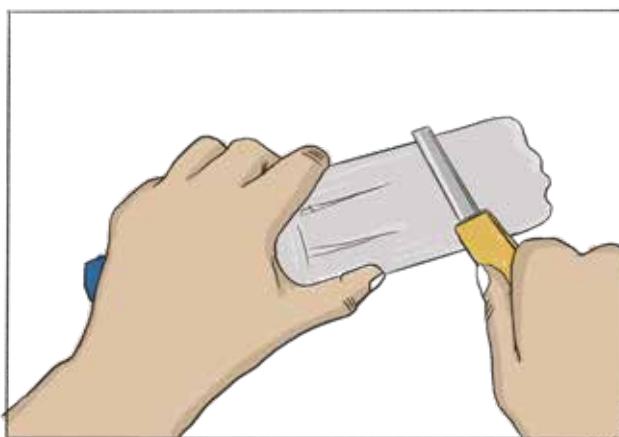
जुगाड़: कड़क प्लास्टिक वाली कोई चीज़ जैसे बोतल या गिलास, केंची, कटर या चाकू, स्मार्टफोन



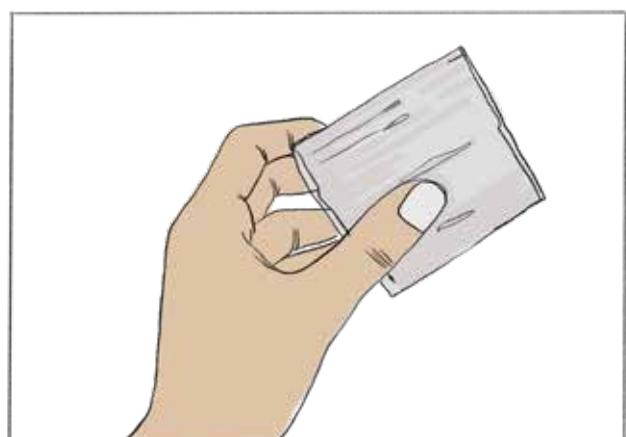
होलोग्राम



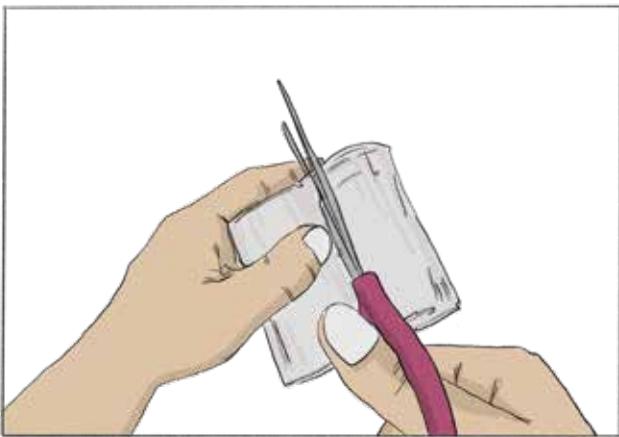
प्रभाकर डबराल



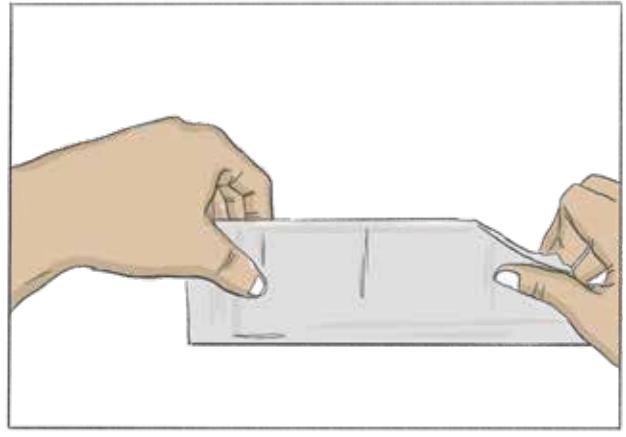
बोतल की गर्दन व पीछे के हिस्से को काट लो।



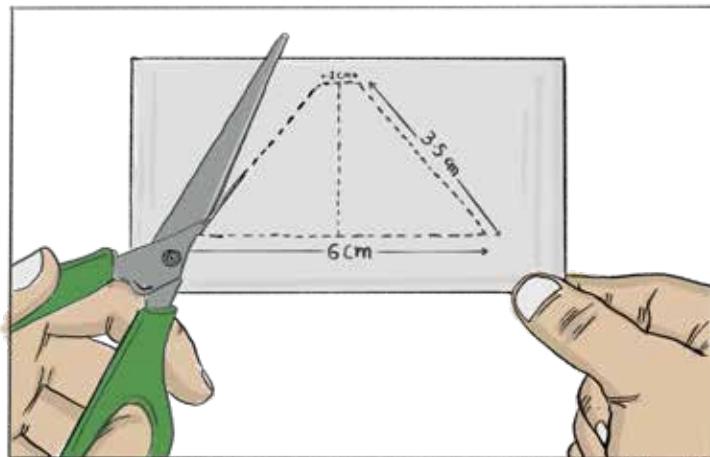
बचे हुए हिस्से को हाथ से दबाकर चपटा कर लो।



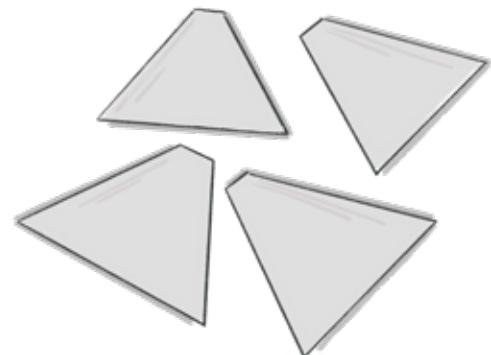
इसकी एक परत को लम्बाई में काट लो।



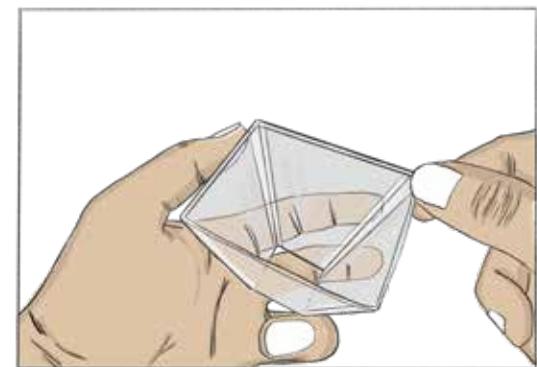
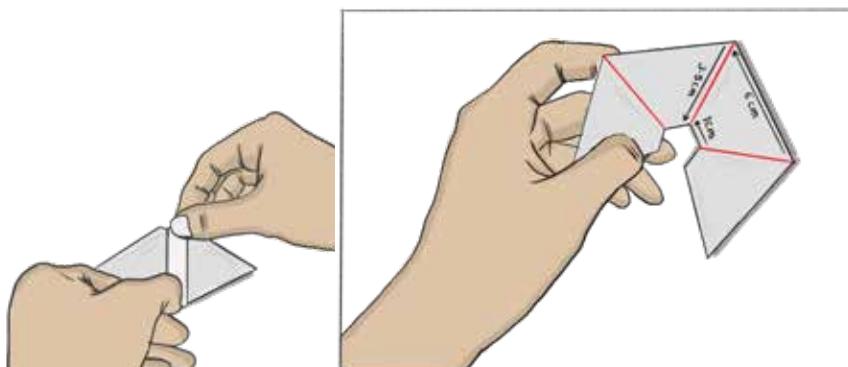
इस प्लास्टिक शीट को चार बराबर भागों में मोड़ लो।



अब इस पर एक समलम्ब चतुर्भुज (trapezium) बनाओ जिसकी एक भुजा 6 सेमी, दो भुजाएँ 3.5 सेमी और एक भुजा 1 सेमी की हो। इस चतुर्भुज को काट लो।

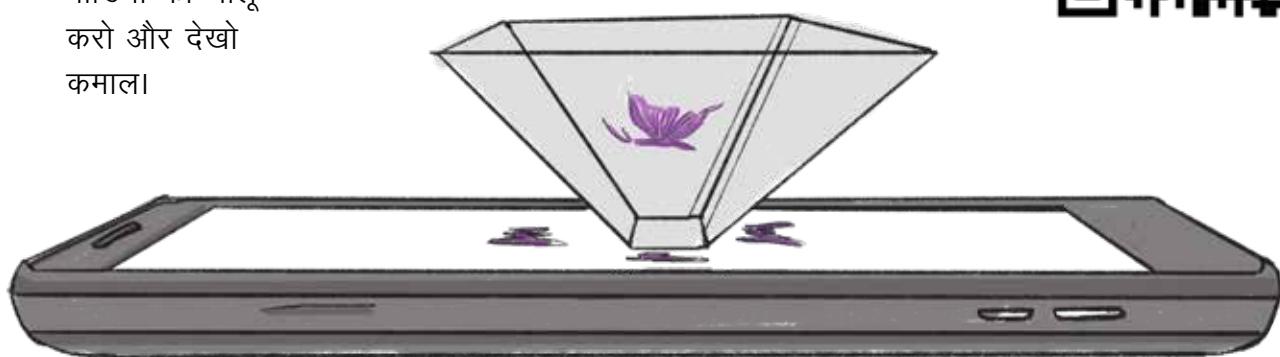


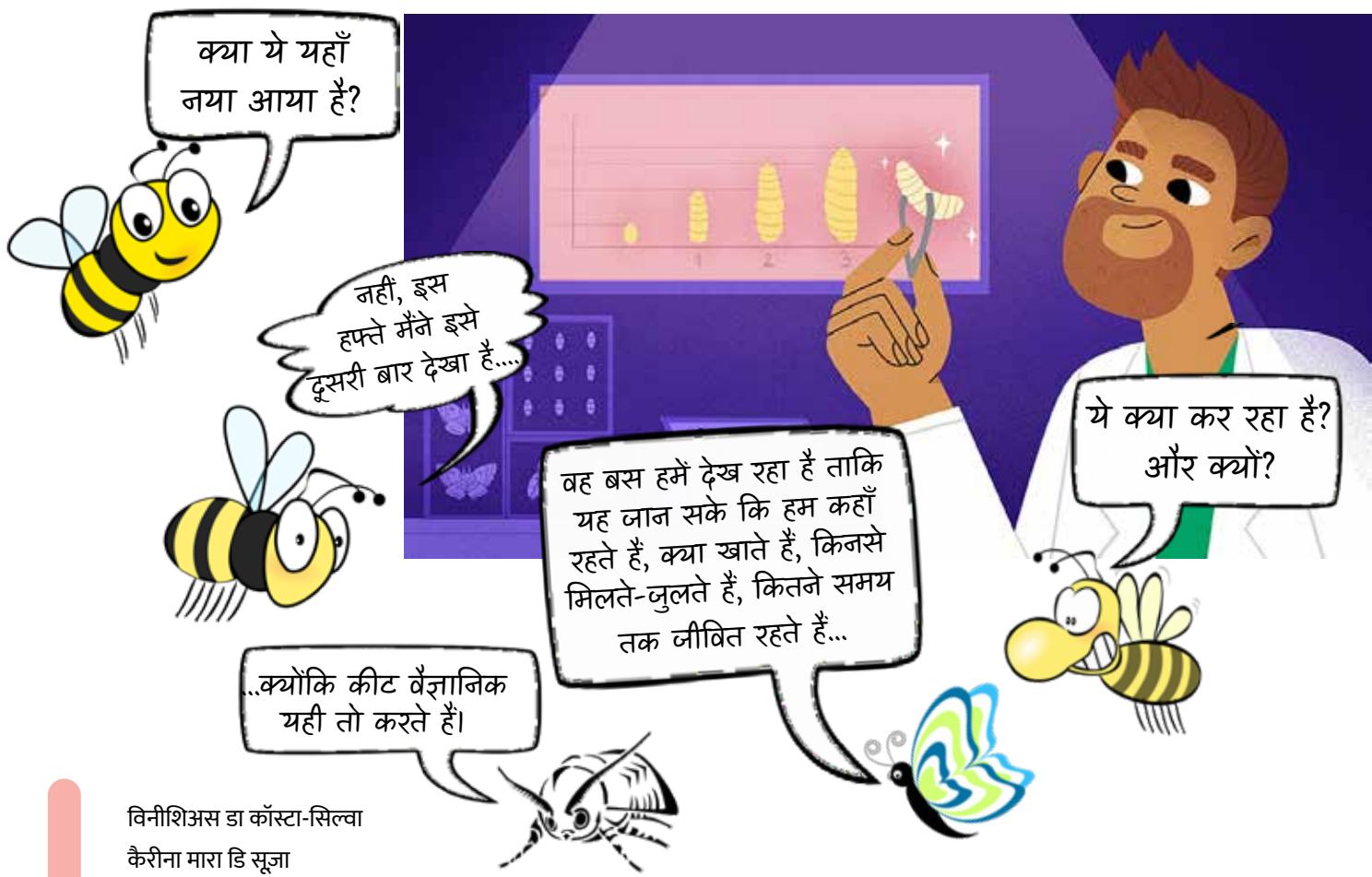
तुम्हें चार ऐसे टुकड़े मिलेंगे।



इन चारों टुकड़ों को सेलो टेप से जोड़कर पिरामिडनुमा आकृति बना लो।

अब अपने स्मार्टफोन से दिए गए QR कोड को स्कैन करो। फिर प्लास्टिक पिरामिड को स्मार्टफोन के केन्द्र में रखकर वीडियो को चालू करो और देखो कमाल।





विनीशअस डा कॉस्टा-सिल्वा

कैरीना मारा डि सूजा

लुइज ऐन्टोनियो लीरा

कैथरीन सोल

पैट्रीशिया जैकलीन थिसैन

अपराधों के बारे में कीड़े हमें क्या बता सकते हैं?

कीट: सुन्दर और महत्वपूर्ण

सौर के दौरान या शहर के किसी व्यस्त पार्क में तुमने मधुमक्खियों, मक्खियों, तितलियों या भृंगों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखा होगा—फूलों के पास मँडराते हुए, घास के बीच टहलते हुए, या फलों के पेड़ पर चढ़ते हुए। कीट पृथ्वी पर सबसे अधिक संख्या में पाए जाने वाले जीव हैं। ये ऐसे स्थलीय जीव हैं, जो वातावरण में बहुत अच्छी तरह ढल गए हैं। महासागरों को छोड़कर यह पृथ्वी के लगभग हर कोने में पनपते हैं। हालाँकि कुछ कीट, जैसे कि मधुमक्खियाँ, चींटियाँ या मच्छर इन्सानों के दुश्मन माने जा सकते हैं। इसकी वजह अपने बचाव में काटने या डंक मारने की उनकी प्रवृत्ति और कुछ मामलों में रोग फैलाने में उनकी भूमिका हो सकती है। लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि वे स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

जीव विज्ञान के अन्तर्गत कीटों का अध्ययन करने वाले विशेष क्षेत्र को कीट विज्ञान और इस विषय का अध्ययन करने वाले पेशेवरों को कीट विज्ञानी कहा जाता है। कीट विज्ञानियों के पास कीटों के बारे में व्यापक ज्ञान होता है: वे कहाँ रहते हैं, कितने समय तक जीवित रहते हैं, क्या खाते हैं और अण्डे से वयस्क होने में उन्हें कितना समय लगता है या उनका व्यवहार मनुष्यों को कैसे प्रभावित कर सकता है।

अपराध स्थल के सुराग के तौर पर कीट

कुछ कीट अपराधों को सुलझाने में जासूसों और न्याय प्रणाली की मदद कर सकते हैं। कीट विज्ञानियों की बदौलत ऐसे सवालों के जवाब दिए जा सकते हैं कि “यह हत्या कितने समय पहले हुई थी?” या “मेरे घर में दीमक कितने समय से रह रहे हैं?” अपराधों को सुलझाने में मदद करने के लिए कीटों के अध्ययन को फोरेंसिक एंटोमोलॉजी कहते हैं। ‘फोरेंसिक’ का अर्थ है कानूनी मामलों की जाँच और समाधान के लिए वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करना।

वास्तविक जीवन के ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ कीट कानूनी मसलों को हल करने में बतौर सुराग काम आए हैं। ऐसे कि यह समझने में कि किसी खाद्य पदार्थ के दूषित होने के लिए कौन जिम्मेदार है, घर में कीटों का हमला कब और कैसे हुआ या किसी प्रतिबन्धित पदार्थ या जहर को खाने से किसी व्यक्ति की मौत कैसे हुई।

घरों से जुड़े अपराध

मान लो कि तुम और तुम्हारा परिवार एक नए घर में शिफ्ट हुए हैं। तुम दीवार पर एक तस्वीर टाँगने की तैयारी कर रहे हो। लेकिन पहली ही कील ठोकने पर तुम्हें दीवार के अन्दर दीमक दिखाई देती है, जो घर की संरचना को नुकसान पहुँचाती है। इस कारण तुम्हारा परिवार घर बेचने वाली कम्पनी या व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दायर करता है, यह दावा करते हुए कि घर में पहले से ही दीमक थे। अब सवाल यह उठता है कि “ये दीमक वहाँ कब से रह रहे हैं?” दीमकों का अध्ययन करके कीट विज्ञानी उनकी कॉलोनी की उम्र का अनुमान लगा सकते हैं। यह एक अहम सबूत हो सकता है ये तय करने के लिए कि दीमक तुम्हारे घर खरीदने के पहले से वहाँ थे या बाद में आए। यह शहरी फोरेंसिक कीट विज्ञान मामले का एक उदाहरण है, जिसमें इन अपराधों को सुलझाने के लिए भृंग, चींटियों और दीमकों जैसे कीटों का उपयोग किया जाता है (चित्र 1 में बी, सी, ई)।

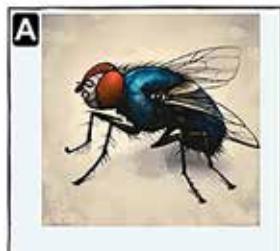
खाद्य पदार्थों का दूषित होना

मान लो कि तुम एक स्वादिष्ट चॉकलेट खाने जा रहे हो। जैसे ही तुम पैकेट खोलते हो तुम्हें उसमें कीटों के लार्वा दिखाई देते हैं। अब सवाल उठता है कि ये लार्वा वहाँ कब से हैं? चॉकलेट कहाँ दूषित हुई? क्या कीड़े तुम्हारे घर में चॉकलेट में घुस गए, क्या चॉकलेट बाजार में दूषित हुई, या यह चॉकलेट बनाने वाले की लापरवाही का नतीजा था?

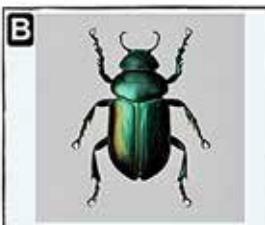
चॉकलेट कब खरीदी गई और लार्वा कब दिखे इस जानकारी के साथ-साथ कीट के आकृति विज्ञान, लम्बाई, वज़न और पसन्दीदा प्राकृतवास (habitat) का अध्ययन करके कीट विज्ञानी इन सवालों का जवाब दे सकते हैं। यह संग्रहित खाद्य पदार्थों के लिए फोरेंसिक टैक्नोलॉजी के मामले का एक उदाहरण है। ऐसे मामलों में आम तौर पर मक्खियाँ, भृंग, पतंग, तिलचट्टे और चींटियाँ शामिल होती हैं (चित्र 1 में ए, डी, एफ)।

अवैध पशु तस्करी

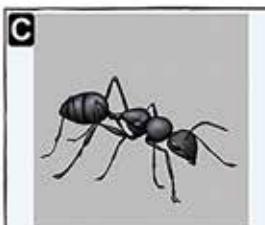
मान लो कि तुम किसी बड़े हवाई अड्डे पर काम करने वाले पुलिस अधिकारी हो। तुमने एक यात्री को देखा जो



(ए) मक्खियाँ



(बी) भृंग



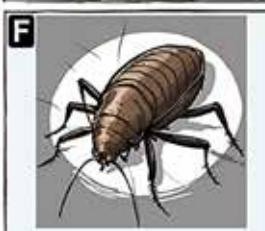
(सी) चींटियाँ



(डी) पतंगे



(ई) दीमक



(एफ) तिलचट्टे

लेकिन कीटों से यह सारी जानकारी कैसे हासिल की जाती है?

मान लो कि तुम एक जासूस हो जिसे अपराध को सुलझाने के लिए बुलाया गया है। जब तुम अपराध स्थल पर पहुँचते हो तो पीड़ित को जमीन पर पड़ा हुआ देखते हो। करीब से देखने पर तुम्हें उसके शरीर के पास मक्खी के कुछ कीड़े दिखते हैं। कीट विज्ञानी को दिखाने के लिए तुम कुछ कीड़ों को सावधानी से इकट्ठा करते हो। कीट विज्ञानी प्रजाति की पहचान करता है और तुमको मिले लार्वा (इल्लियों) के जीवन चक्र, आकार और वज़न के बारे में जानकारी देता है। जैसे कि मक्खी के प्राकृतवास की जानकारी तुम्हें उस जगह के बारे में बता सकती है जहाँ हत्या हुई थी। इसके अलावा, कीड़ों के आकार और वज़न के बारे में जानकारी से यह भी पता चल सकता है कि अपराध किए जाने और शव मिलने के बीच कितना समय बीता। इस समय को पोस्टमार्टम अन्तराल (postmortem interval - PMI/ पीएमआई) के रूप में जाना जाता है।

चित्र 1. अपराधों को सुलझाने में फोरेंसिक कीट विज्ञानियों की मदद करने वाले कीटों में शामिल हैं: (ए) मक्खियाँ, (बी) भृंग, (सी) चींटियाँ, (डी) पतंगे, (ई) दीमक, और (एफ) तिलचट्टे।

कीटों से भरा एक डिब्बा अवैध ढंग से ले जा रहा है। तुम्हें शक है कि वह उन्हें बेचना चाहता है। यह मामला पशु तस्करी का है, जो दुनिया भर में अवैध है। अगर वह यात्री कुछ भी बताने को तैयार ना हो तो तुम कैसे पता लगाओगे कि वो कीट कहाँ से लाए गए हैं?

कीट की प्रजाति और उसके प्राकृतवास की पहचान करके कीट विज्ञानी तस्करी किए गए कीटों के बारे में अहम जानकारी जुटाने में मदद कर सकते हैं। वे यह भी बता सकते हैं कि क्या वो कीट असाधारण या दुर्लभ प्रजाति के हैं। अगर ऐसा है तो अपराध और भी गम्भीर माना जाएगा।

हिंसक मौत

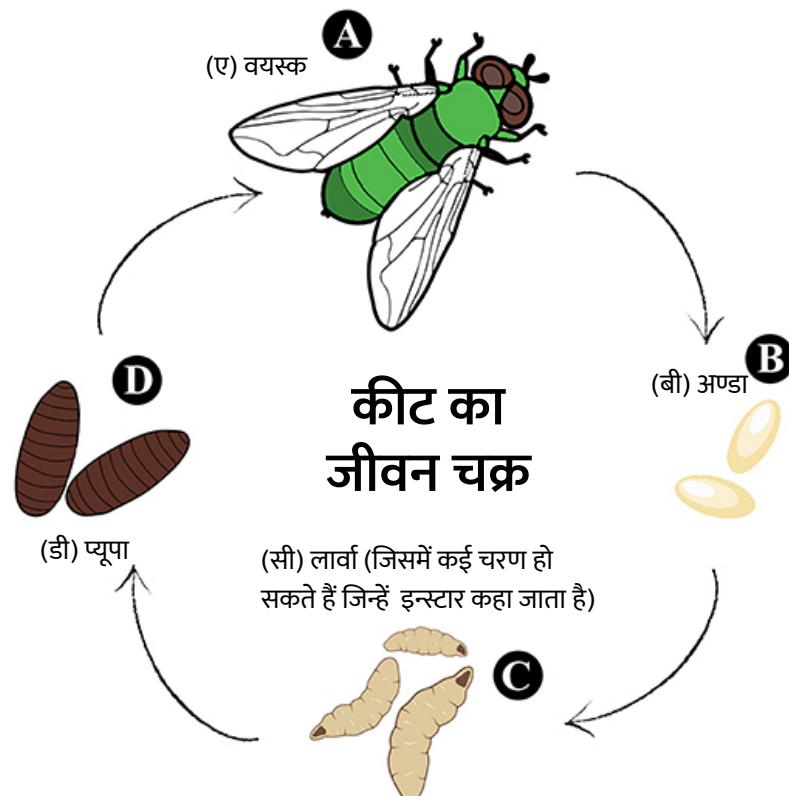
हिंसक मौतों के मामलों में कीटों की भूमिका वह जाना-माना क्षेत्र है जिसका फोरेंसिक एंटोमोलॉजी में सबसे अधिक अध्ययन किया गया है। ऐसे मामलों में कीट इस तरह के सवालों के जवाब देने में अहम भूमिका निभाते हैं कि “पीड़ित कौन है?” या “मौत को कितना समय हो गया?” या “हत्या कहाँ हुई?”

मरने के बाद मानव शरीर में सड़ने की लम्बी प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस दौरान त्वचा, हड्डियों, नाखूनों और बालों में मौजूद रासायनिक तत्व, जैसे कार्बन और नाइट्रोजन, पृथकी में पुनः अवशोषित हो जाते हैं। सड़ने की यह प्रक्रिया नेक्रोफेगस कीटों की विभिन्न प्रजातियों को आकर्षित करती है। नेक्रोफेगस वे कीट होते हैं जो सड़ते हुए जानवरों के पदार्थों को खाते हैं। ये

कीट इन रासायनिक तत्वों द्वारा कई किलोमीटर दूर से भी आकर्षित होते हैं! ये कीट सड़ते हुए पदार्थ को खाकर वहीं अपने अण्डे या लार्वा देते हैं।

उदाहरण के लिए, एक मक्खी एक शव को खोजकर उस पर अपने अण्डे देती है। ये अण्डे फिर लार्वा में बदल जाते हैं, जो खाते और बड़े होते हैं। ये लार्वा (या इन्स्टार) तीन चरणों से गुज़रते हैं। फिर विकास के अगले चरण में प्रवेश करने के लिए ये एक सुरक्षित (और आम तौर पर अँधेरा) स्थान तलाशते हैं, जिसे प्यूपा चरण कहते हैं। यह तितली के ककून चरण जैसा ही है। अन्ततः एक वयस्क मक्खी प्यूपा से निकलती है (चित्र 3)।

प्रत्येक प्रजाति में अण्डे से वयस्क तक की इस पूरी प्रक्रिया में एक विशिष्ट समय लगता है। यह प्रक्रिया तापमान और आर्द्रता जैसे पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित हो सकती है। इसलिए किसी शव पर पाए जाने वाले लार्वा के प्रकार की पहचान करके और उसके आकार, वजन और संरचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन करके, कीट विज्ञानी लार्वा की उम्र का अनुमान लगा सकते हैं। इस तरह पीएमआई जैसी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती



चित्र 2. कुछ कीट अपने जीवन चक्र में शरीर का रूप बदलते हैं। अधिकांश कीटों में चार चरण होते हैं: (ए) वयस्क, (बी) अण्डा, (सी) लार्वा (जिसमें कई चरण हो सकते हैं जिन्हें इन्स्टार कहा जाता है), और (डी) प्यूपा। प्यूपा फिर वयस्क हो जाता है और चक्र दोबारा शुरू हो जाता है।

है। इस जानकारी को अदालत में सबूत के रूप में पेश किया जा सकता है ताकि सन्दिग्ध को दोषी ठहराने या बरी करने में मदद मिले।

फोरेंसिक की रोशनी में कीटों को देखना

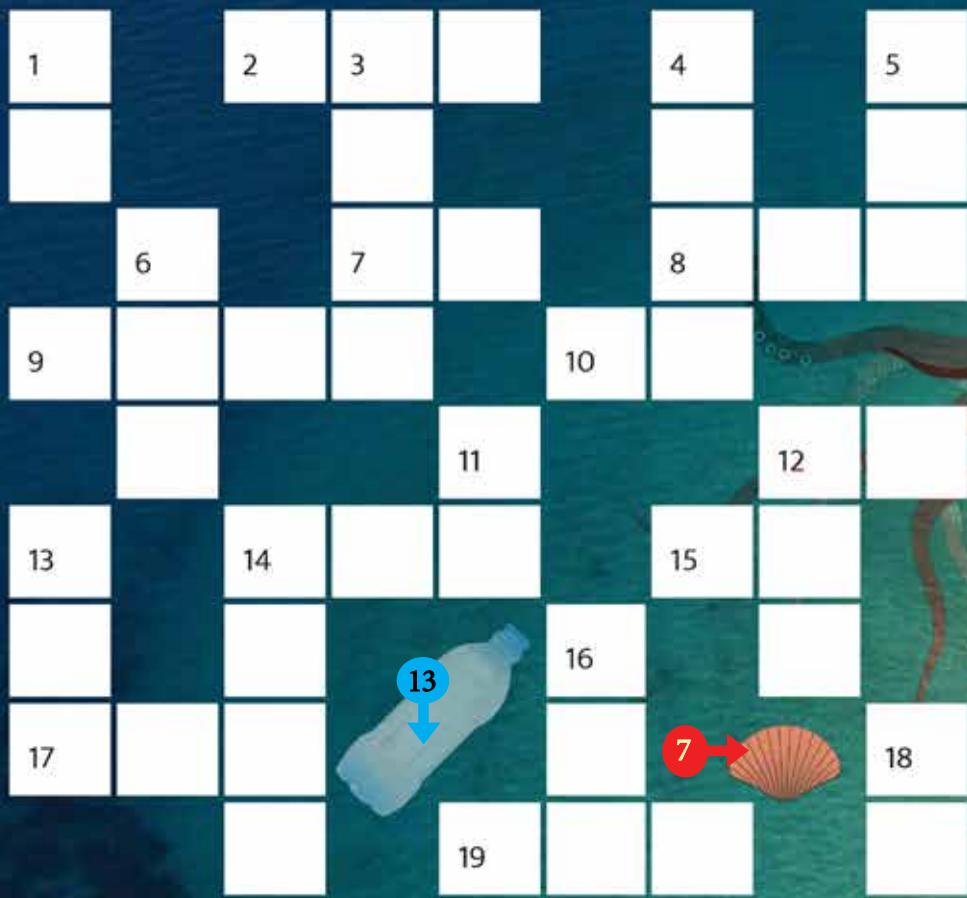
कीटों के आवास को नष्ट करने, कीटनाशकों का उपयोग करने, जलवायु परिवर्तन और अन्य कारकों की वजह से कीटों की आबादी घट रही है। यह पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता के लिए बड़ा खतरा है। इसलिए हमें कीटों की विविधता और इन अद्भुत जीवों द्वारा किए जाने वाले आवश्यक पारिस्थितिक कार्यों, जिनमें अपराध स्थल की जाँच भी शामिल है, को संरक्षित करने के लिए कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। तो अगली बार जब तुम प्रकृति में कोई कीट देखो तो उनकी इस शानदार भूमिका को याद रखना!

युवा सम्पादक: ऐरिक (11 वर्ष) और जसराह (11 वर्ष)

यह लेख 8 नवम्बर 2024 को <https://kids.frontiersin.org/articles/10.3389/frym.2024.1431909> पर प्रकाशित हुआ था।

फ्रॉन्टियर्स फॉर यंग माइंड्स एक ऐसी ऑनलाइन पत्रिका है जहाँ वैज्ञानिकों के शोधपत्रों पर आधारित लेख बच्चे सम्पादित करते हैं।





चित्रपट्टी

बाँ से दाँ
ऊपर से नीचे



6

11

15 →

सुडोकू 84

9	4	8						3
2	7		8		3			1
	1	5	2	6		9		
1	8					6		7
2	9	6		7	3	8	5	
5		9	3					
	1	3	8	7				
2	4		1	8		9		
		2	9				6	

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? परं ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

17 →



12 →



16



8 →



14



2 →



12



जवाब पेज 42 पर

त्रिकोण

त्रिकोण

13

मई 2025

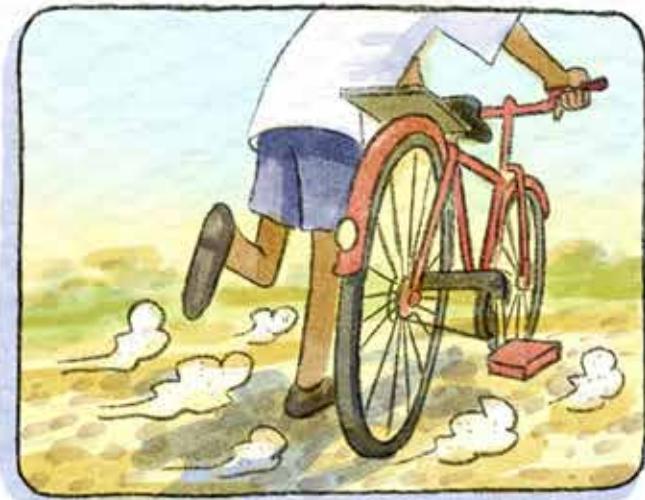
19 →

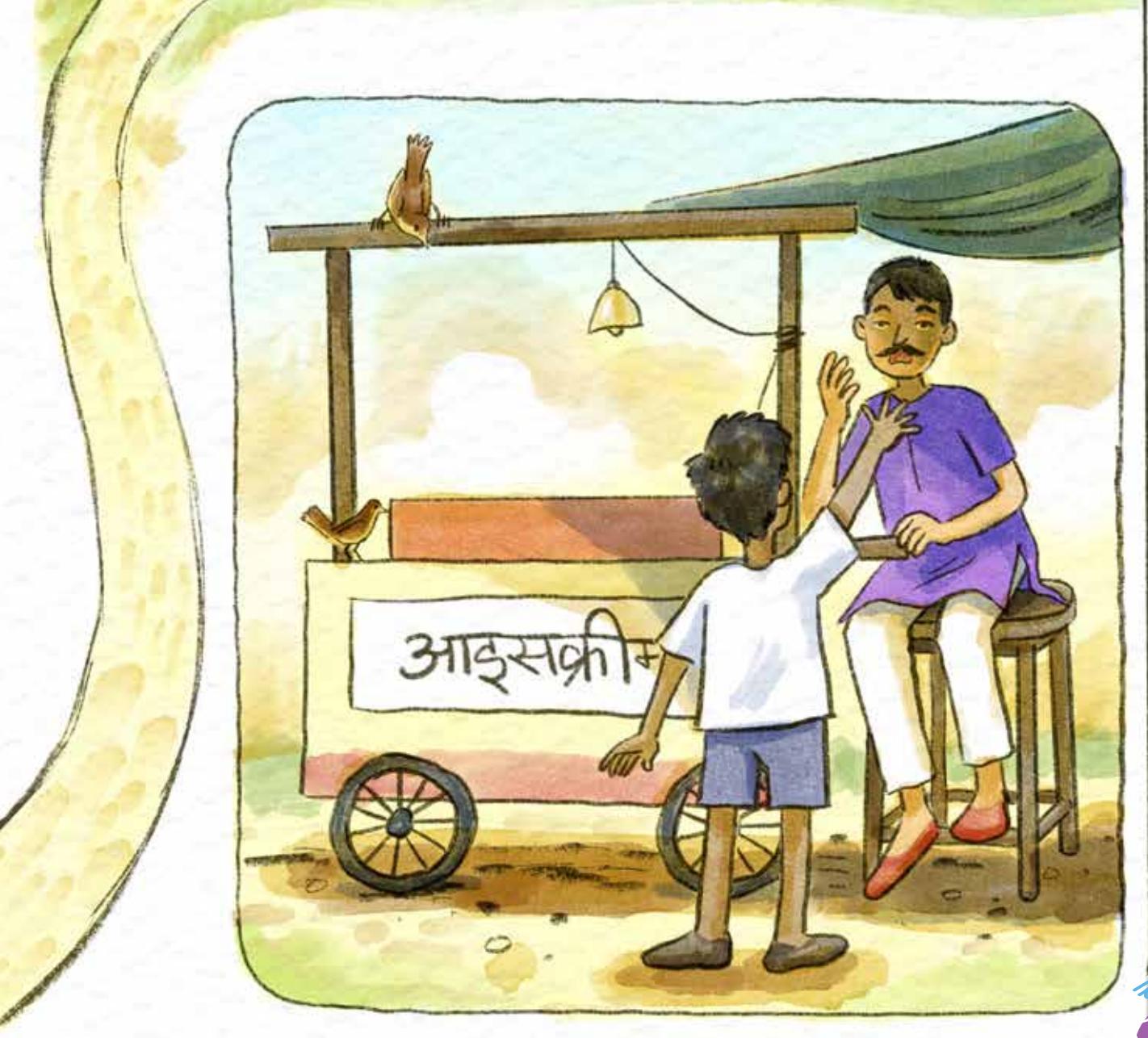
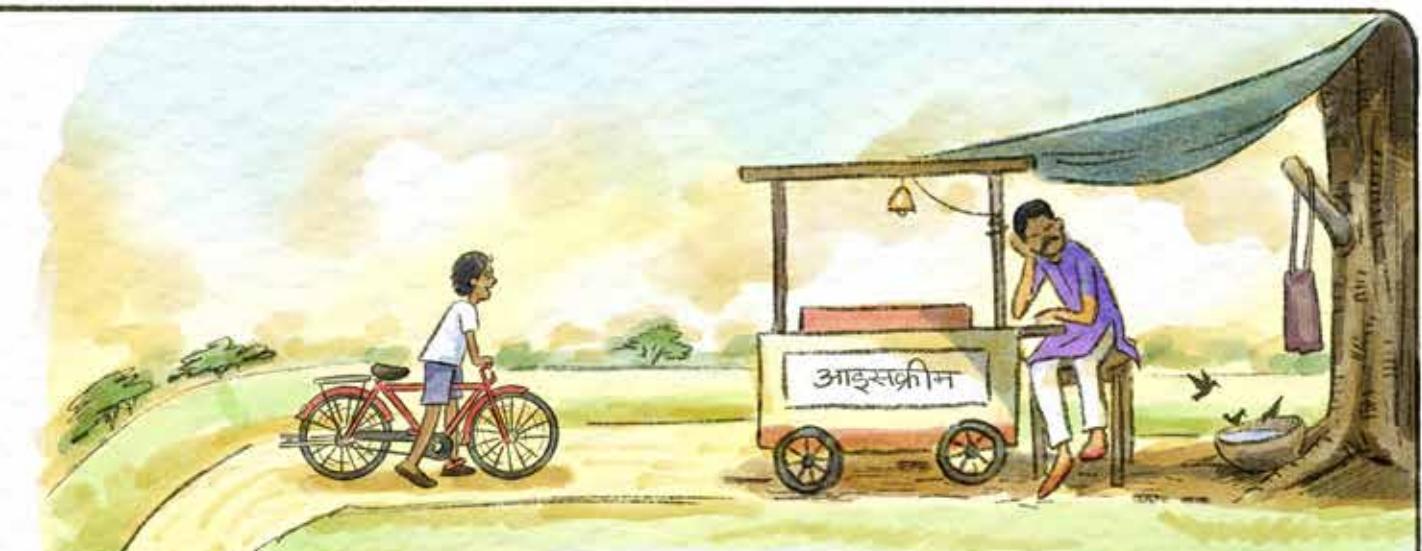
14 →



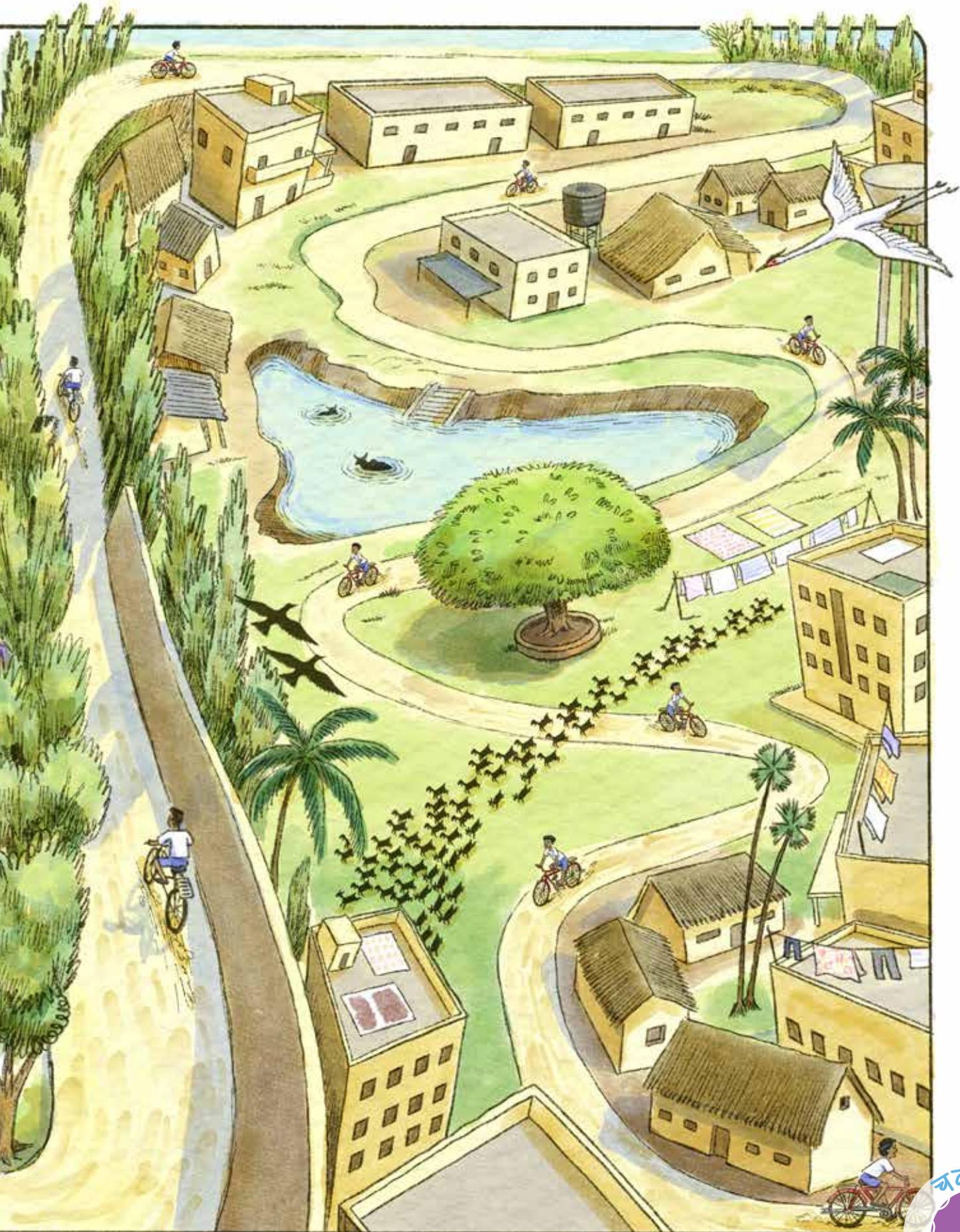
ଆଟାର୍କିମା

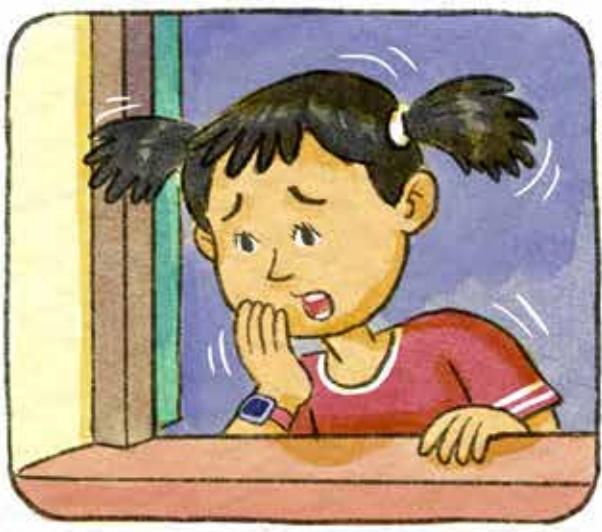
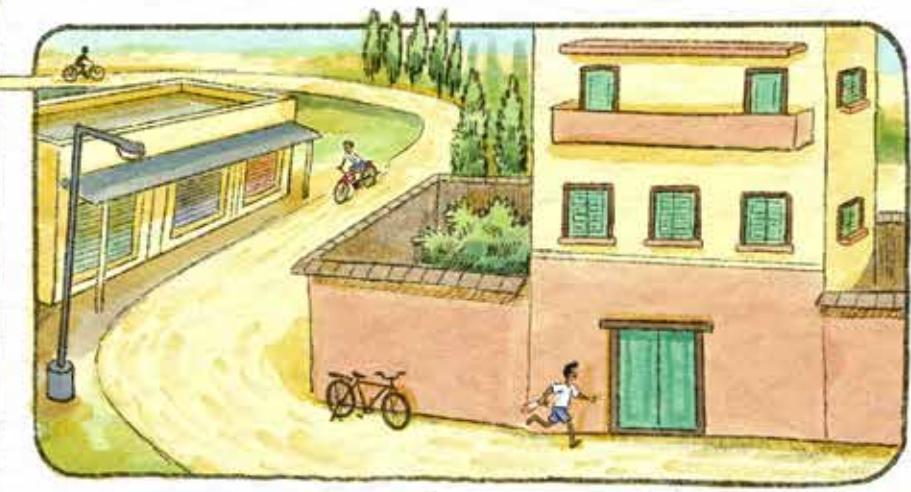
ପ୍ରଦୀପ

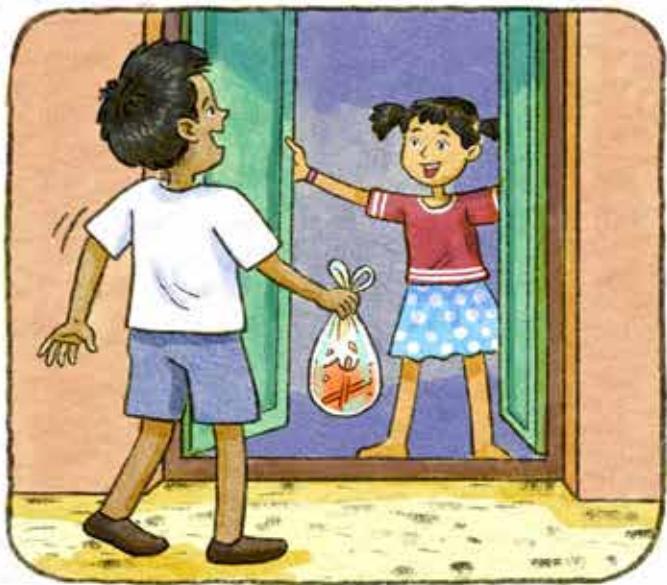












mg_24



बिल्ली के बच्चे

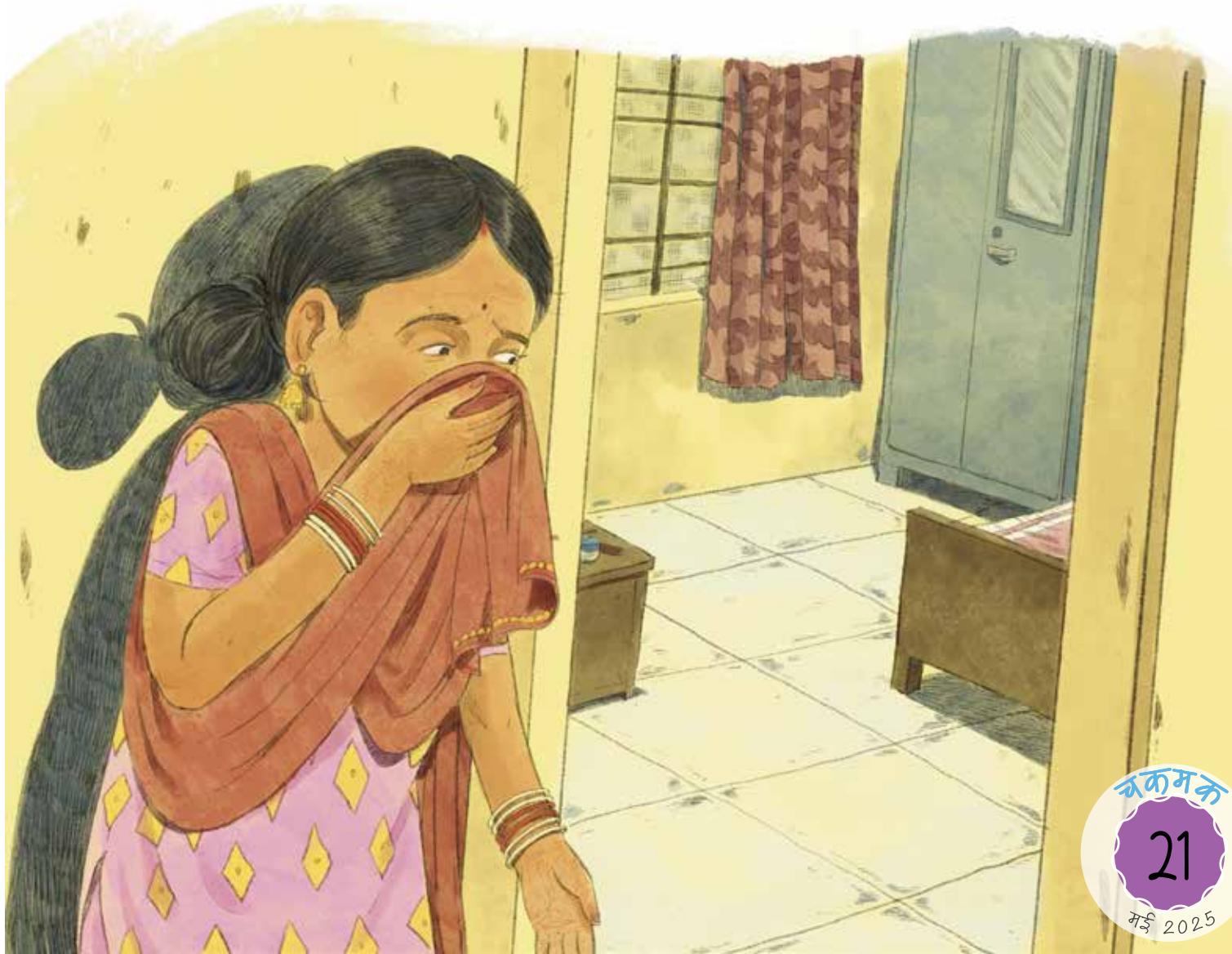
शाहिमा

चित्र: हर्षीब अली

अक्सर कहा जाता है कि बाल-साहित्य वयस्क ही लिखते हैं या लिख सकते हैं। लेकिन प्रकाशन की दुनिया में हम आजकल नई ऊर्जा और नई हलचल देख सकते हैं। इसकी कुछ झलकियाँ तुम्हें 'नए पत्ते' नाम के इस नए कॉलम में देखने को मिलेंगी। इस कॉलम में अंकुर संस्था से जुड़े स्कूली बच्चे-बच्चियाँ ही लिखा करेंगे। कह सकते हैं कि यह लिखावट एक अनगढ़ प्रयास है। लेकिन इसकी शैली, विषयवस्तु और नजरिए में तुम्हें शायद एक ताजगी मिलेगी। उमीद है कि यह कॉलम तुम्हें चकित करेगा और कभी-कभार विचलित भी।

पहले लाली अपनी जिन्दगी मजे से जी रही थी। तब उसे कहीं भी सोने के लिए जगह मिल जाती थी। अगर पार्क में किसी ने गद्दा या बोरा रखा हो तो वह उसी पर सो जाती थी। लेकिन अगर किसी गली में कुत्ते का गद्दा रखा हो तो वह उस पर नहीं सोती थी। उसे पता था कि कुत्ता उसे भगा देगा। वह यहाँ की नहीं थी। दूर शहर से आई थी। अब लाली बच्चे देने वाली थी। इसलिए सभी लोगों ने अपनी खिड़कियाँ बन्द कर ली थीं। खुशबू के घरवालों ने भी। मगर पता नहीं वह कहाँ से अन्दर आ गई।

तब खुशबू के भैया की नई-नई शादी हुई थी। उनके कमरे में सामने की ओर एक खिड़की थी। वहाँ से बिल्ली का आना



मुश्किल था। वह खिड़की काफी ऊँचाई पर थी और फिर लोहे के मजबूत जाल से ढँकी भी थी। बिल्ली को बहुत ऊँची छलाँग लगानी पड़ती। एक जगह सामने की तरफ भी थी। उस ओर जमीन कुछ नीची थी। वहाँ से आने के लिए बिल्ली को ज्यादा मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ता। सीढ़ियों के पास भी एक खिड़की थी। उसमें ना ही कोई जाली लगी थी और ना ही वह किसी पर्दे से ढँकी थी। वह ज्यादा बड़ी तो नहीं थी। मगर बिल्ली के आने में कोई दिक्कत नहीं थी।

कुछ दिनों से खुशबू की भाभी देख रही थी कि दिन ब दिन घर गन्दा होता जा रहा है। बदबू तो इस कदर फैली थी जैसे सालों से घर साफ नहीं

हुआ हो। किसी मरे हुए जानवर की सी बदबू आ रही थी। भाभी ने सोचा कि कहीं कोई चूहा तो नहीं मर गया। ऊपर वाले कमरे में जो भी आता सबसे पहले उसके मुँह से निकलता, “उफ्फ...! कितनी बदबू आ रही है यहाँ।” उनका बेड पत्थर का था। सामान रखने के लिए भी वहाँ थोड़ी-सी ही जगह थी। उन्होंने सब जगह की सफाई कर डाली। बस बेड के नीचे की नहीं की। घर में सब इस बात से अनजान थे कि बेड के नीचे भी कुछ है।

फिर भैया को याद आया कि बेड की सफाई करना तो वे भूल ही गए। अपने ढँके हुए बेड को जब उन्होंने खोला तो उसकी बदबू ऐसी थी जैसे कोई अण्डा सड़ रहा हो। जैसे ही वह बदबू उनकी



नाक में घुसी उनकी आँखें मींच-सी गई और साँस लेना मुश्किल हो गया। जब उनसे वह बदबू बर्दाश्त नहीं हुई तो उन्होंने अपना सर जल्दी से ऊपर किया। भाभी ने कहा, “क्या हुआ? ऐसे क्यों उठ गए?”

वे बोले, “यहाँ से बहुत बदबू आ रही है और अन्दर पूरा अँधेरा हो रखा है।” फिर भैया ने अपनी नाक पर रुमाल बाँधा और अन्दर जाकर देखा तो चमकीली आँखें नज़र आईं। जब फोन का टॉर्च जलाकर देखा तो लाली के चार छोटे-छोटे बच्चे दिखाई दिए। उसने बेड के नीचे ही बच्चे दिए थे। पहले तो उन्होंने सोचा कि इन्हें बाहर छोड़ आते हैं। मगर भाभी ने कहा, “नहीं इतनी सर्दी हो रही है। कहाँ ले जाएंगी वो अपने बच्चे? उनकी तो अभी आँखें भी नहीं खुली हैं।”

जब भैया ने भाभी को दिखाया तो बिल्ली अपना मुँह आगे किए अपनी टाँगों को फैलाए लेटी पड़ी थी। उसके बच्चे उसके पेट के पास ही सो रहे थे। बच्चे बहुत प्यारे लग रहे थे। मगर उनकी ऐसी बदबू भाभी को भी बिलकुल पसन्द नहीं आई। भाभी ने कहा, “जब आँखें खुल जाएँगी तब इन्हें हम बाहर छोड़ आएँगे।”

भाभी का पूरा मन था कि वह उन बच्चों को वहीं रखें। मगर भैया बहुत गुस्सा कर रहे थे। पहले जहाँ सुबह की चाय के लिए एक पैकेट दूध आता था, अब दो पैकेट आने लगा। आधा दूध वह उसे सुबह देते और आधा शाम को। अभी तो लाली ठीक से चल भी नहीं पा रही थी कि अपना खाना ढूँढ़ने जाए। चार दिन बाद लाली ने चलना शुरू किया। वह बार-बार अपने बच्चों को मुँह में दबाकर ले जाती और फिर खुशबू के घर ही छोड़ जाती।

एक दिन भैया ने एक मोटी चादर तह करके लाली की जगह पर रख दी ताकि वह थोड़ी गर्म हो सके। फिर भैया और खुशबू दोनों बच्चों को धूप दिखाने छत पर ले गए। थोड़ी देर में बच्चे छत के

दरवाजे के पास जाने लगे। खुशबू को लगा कि कहीं वे नीचे ना गिर जाएँ। इसलिए वह बार-बार उन्हें उठाकर वहीं रखे जा रही थी। भैया बोले, “देखो यह तो आर्मी की ट्रेनिंग पूरी कर रहे हैं।” इस बात पर खुशबू और भैया दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

बिल्ली के बार-बार मुँह में लेने से बच्चों की आँखें बहुत सूज गई थीं। मगर कुछ दिनों बाद भी जब उनकी आँखें नहीं खुलीं तो भैया को चिन्ता हुई। अब लाली रात में बर्तन गिराने लगी थी और खाना भी जूठा करने लगी थी। इसलिए भैया ने सोचा कि इसे बाहर छोड़ आते हैं। भैया ने दो-तीन बार उन्हें बाहर छोड़ भी दिया। मगर वह बार-बार वहीं बैठकर नीचे अपने बच्चों को रख देती थी। मगर इधर कुछ दिनों से तो वह गायब थी। उसके बच्चे भी पता नहीं कहाँ चले गए थे। शायद वह अपने बच्चों को दूसरे घर में रखने का सोच चुकी थी।



शाहिमा पिछले छह साल से अंकुर के किताबघर से जुड़ी हैं। वह दक्षिणपुरी की सुभाष बस्ती में रहती हैं और राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं। कहानियाँ पढ़ना और लिखना उनकी खासियत है।



भाग - 11

मेहमान जो कभी गए ही नहीं



अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेश्वर राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाभेकर

नागफनी/प्रिकली पियर

वैज्ञानिक नाम: ओपन्शिया ट्यूना
(*Opuntia tuna*)

मूल: वैस्ट इण्डीज़ और मैक्सिको
कैसे पहुँचा: भारत में इसकी
मौजूदगी 1750 के दशक में दर्ज की
गई थी। कहते हैं कि टीपू सुल्तान
इसका इस्तेमाल अपने इलाके की
किलाबन्दी के लिए करते थे।

नागफनी सूखे या रेगिस्तान जैसे परिवेश में उगने वाला एक कैकटस है। यह समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर भी मिल जाता है। ये पौधा 1.5 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। आम तौर पर इसके तने फीके हरे रंग के और चपटे व रसीले (succulent) होते हैं। इसके पत्ते परिवर्तित होकर काँठों का रूप ले लेते हैं।

इस पौधे के फूल पीले और फल नाशपाती सरीखे लाल-बैंगनी या फिर गुलाबी-लाल रंग के होते हैं। फूल मई के मध्य से अगस्त के मध्य तक खिलते हैं और फल नवम्बर से फरवरी तक।

असर

जंगलों में नागफनी के अनियंत्रित फैलाव से जंगल के पेड़ों के दुबारा उगने पर बुरा असर पड़ता है। अक्सर यह छाँव वाली जगहों में लैंटाना के साथ पाया जाता है, खासकर उन इलाकों में जहाँ बहुत ज़्यादा पौधे फैल चुके हों।



प्रवेश

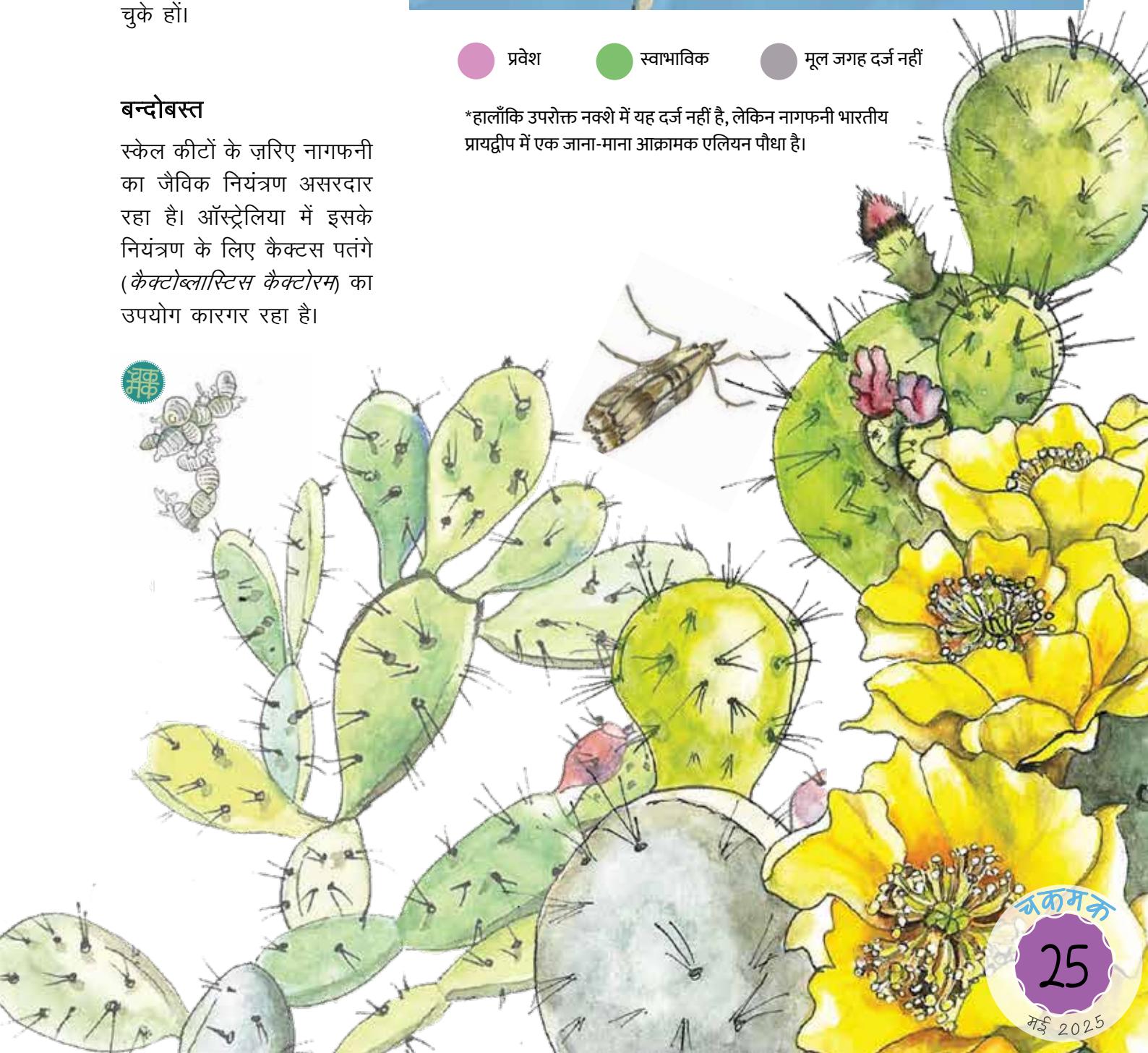
स्वाभाविक

मूल जगह दर्ज नहीं

बन्दोबस्त

स्केल कीटों के ज़रिए नागफनी का जैविक नियंत्रण असरदार रहा है। ऑस्ट्रेलिया में इसके नियंत्रण के लिए कैक्टस पतंगे (कैक्टोब्लास्टस कैक्टोरम) का उपयोग कारगर रहा है।

*हालाँकि उपरोक्त नक्शे में यह दर्ज नहीं है, लेकिन नागफनी भारतीय प्रायद्वीप में एक जाना-माना आक्रामक एलियन पौधा है।



तब मैं दसवीं में पढ़ती थी।

हम लोग स्कूल ट्रिप पर जाने वाले हैं। अगर तुम किसी खास जगह पर जाना चाहते हो तो बताओ। सबके सुझावों के बाद जगह तय की जाएगी।

मेरे जीवन का सबसे कठिन समय

तन्वी श्रीकृष्णा काले
चित्र: अनन्या सिंह

स्कूल ट्रिप

हैदराबाद

हमें हैदराबाद जाना चाहिए।

इस ट्रिप की तैयारी के लिए मुझे सहल (पर्यटन) मंत्री चुना गया था।

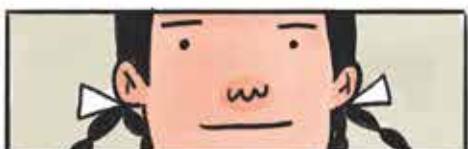
और फिर हमारी तैयारी शुरू हो गई।

मुझे बिना बताए घूमने जाने का प्लान बना रहे हैं। हम्म!! देख लूँगा।

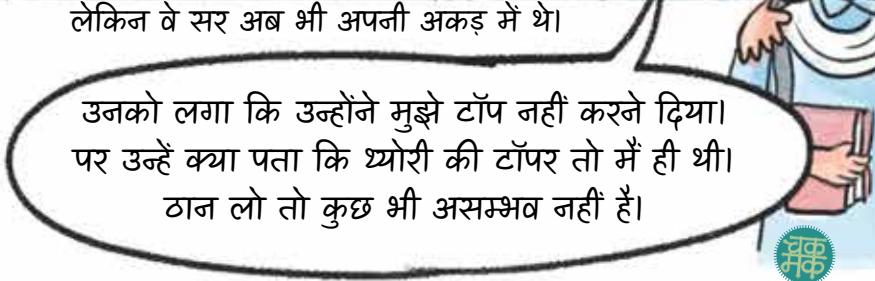
वे टीचर मुझसे बात नहीं कर रहे थे। मुझे ताजे मारे जा रहे थे। लेकिन मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया। मेरे बोर्ड एग्जाम पास आ रहे थे।

क्रमक्र

तन्वी महाराष्ट्र के चन्दपुर जिले के भद्रावती के ज़िला परिषद जूनियर कॉलेज में बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं।



केवल प्रैक्टिकल मार्क्स की वजह से। मैं, मेरे दोस्त और बाकी ठीचर मुझसे खुश थे।



क्यों-क्यों मैं इस बार का हमारा सवाल था:

हँसी क्यों छृटती है?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं।
इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

बढ़ती गर्मी से राहत पाने
के लिए तुम क्या तरीके
अपनाते हो, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें
भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक
बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर
डॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी
भेज सकते हो। हमारा पता है:

୪୫

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्दून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

कौनसी जीवों कौनसी जीवों

दीपक बोहरा, दूसरी, विद्या विकास हाई स्कूल, बेंगलुरु, कर्नाटका

हँसी इसलिए छूटती है क्योंकि पेट में
गुदगुदी वाला बटन दब जाता है।

आराध्या कैराती, पाँचवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मेरी माँ अपने बचपन की कहानियाँ हमें सुना रही थीं। उन्होंने बताया कि जब वो छोटी थीं तो बहुत गोल-मटोल थीं। यह सुनकर हम सब हँसने लगे। पापा ने भी यह बात सुनी तो वे भी हँसे और बोले, “आज भी आप गोल-मटोल ही हैं।” दादी भी वहीं बैठी थीं। दादी ने भी बताया कि बचपन में पापा भी बहुत शरारती थे। दादी जब भोग लगाती थीं तो वे प्रसाद लेकर भाग जाते थे। हम लोग फिर खूब हँसे।



चित्रः रोशनी पैकरा, तीसरी, शासकीय कन्या आश्रम शाला, देवगढ़, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मानवेन्द्र, चौथी, जिंगल बेल्स स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

हँसी हमारे चेहरे का एक इमोशन होता है। इसमें हमारे मुँह से अजीब तरीके से आवाज़ निकलती है। लोग किसी मज़ेदार चीज़ को देखकर हँसने लगते हैं क्योंकि उनके दिमाग में एक ऐसा पत्र आता है जिससे इन्सान के चेहरे में बदलाव आता है और वे अपने चेहरे का कंट्रोल खो देते हैं। इससे इन्सान अजीब से भाव बनाते हैं।

कभी-कभार जब हम अपने दोस्त का कोई मज़ेदार-सा मूमेंट देखते हैं तब हमें हँसी आती है। कभी-कभार ज्यादा हँसने से हमारी साँस फूलने लगती है और हिचकी भी आती है। जब हम लोग मन में अतरंगी-सी मज़ेदार बात सोचते हैं तब भी हमें हँसी आती है।

पीहू कुमारी, आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

श्रीधी राज, छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

जब भी हम खुश होते हैं, तब हमें मज़ा आता है। सबको ये बताने के लिए कि हम बहुत खुश हैं, हमारी हँसी छूट जाती है। और लोग समझ जाते हैं कि यह खुश है और मज़े में है।

पूनम यादव, छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

अगर कोई हँस देता है तो सबकी हँसी छूटती है। कोई अगर किसी का मज़ाक बना देता है तो हँसी ही हँसी छूटती है। और जब कोई गलत लिख देता है तो भी हँसी छूटती है।

हँसी छूटना एक स्वाभाविक क्रिया है जो किसी के खुश होने, चुटकुले सुनाने या गुदगुदी करने पर आ जाती है। असल में यह हमारे दिमाग की जटिल प्रक्रिया से नियंत्रित होती है। कुछ लोग हर बात में हँसने लगते हैं। पर कुछ को बहुत मुश्किल से हँसी आती है। मुझे तो बहुत हँसी आती है। मेरा भाई हमेशा ही कुछ मज़ेदार हरकतें करता है जिससे मैं हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती हूँ।

ज्योति सिंह, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, सरगांव, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

मोबाइल की रील में लोग इतना फनी-फनी नाटक करते हैं कि उनको देखकर हमें हँसी आ जाती है। कई-कई लोग ऐसी हरकतें करते हैं कि उन्हें देखकर हँसी आ जाती है। उल्टा-सीधा मुँह बनाते हैं। ज़ाहिर-सी बात है हँसी तो आएगी ही। और एक बात, स्नैपचैट में ऐसे-ऐसे फिल्टर आते हैं जैसे कि टकले वाला, बड़ी-सी ऊँख वाला, बड़े-से चेहरे वाला। ऐसे फिल्टर लगाने पर अपने आपको ही देखकर हँसी आ जाती है। और कोई-कोई तो ऐसी आवाज़ निकालते हैं कि क्या बताऊँ। और यह सब हँसने के लिए ही तो बनाए जाते हैं, रोने के लिए थोड़े ही ना।



चित्र: मीरा कुजूर, दूसरी, शासकीय कन्या आश्रम शाला, देवगढ़, सरगुजा, छत्तीसगढ़

देव यादव, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,
जेरवारा, राहतगढ, सागर, मध्य प्रदेश

रंजना मिंज, चौथी, शासकीय माध्यमिक शाला, मानापारा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

अगर कोई हँसी वाली बात करता है और हमसे कहता है कि तुम हँसना नहीं, चुप रहना। अगर तुम हँसे तो मैं तुम्हें बहुत मारूँगा। तो जब वह बात पूरी हो जाती है तो ज़रूर हमारी हँसी छूट जाती है और हँसी को तो फिर हम काबू नहीं कर पाते हैं।

हँसी इसलिए छूटती है कि दुनिया मे कुछ लोग
अच्छा बोलते हैं और सुनने में मज़ेदार होता है।
हम सब हँसते हैं जब किसी का कपड़ा फट गया
हो, खेलते-खेलते जब गिर जाते हैं तब भी हँसते
हैं। अच्छा कहानी-चुटकुला सुनाते हैं तब भी हँसी
छूटती है।

शिल्पा यादव, पाँचवीं, प्राथमिक शाला, चलता खास, सरगुजा, છતીસગढ़

जब हम हँसी को रोक नहीं पाते तो हमारी हँसी छूट जाती है।

अवनि धीमान, छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

हँसी एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। जब मैं कोई कॉमेडी मूवी देखती हूँ या दोस्तों से चुटकुले सुनती हूँ तो मेरी हँसी छूट जाती है। कक्षा में जब अध्यापिका शरारती बच्चों को डाँटती हैं तो मेरी हँसी छूट जाती है। टॉम एंड जैरी मेरा पसन्दीदा कार्टून प्रोग्राम है, जिसे देखते हुए मेरी खूब हँसी छूटती है। एक मामूली-से मच्छर को मारने के लिए घर में सब आतंक मचा देते हैं और जब मच्छर हाथों से निकल जाता है तो सब ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं। और घर में खुशी का माहौल बन जाता है।

रिद्धिमान सिंह, चौथी, जिंगल बेल्स स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

हँसी हमारे मुँह से छूटती है। अगर कोई अगड़म-तिगड़म मजे वाली घटना हो जाए तो सब लोग अपने दाँत की चमक दिखाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते हैं। मुझे हँसी तब आती है जब कोई मुझे डाँटना नहीं चाहता पर तब भी फालतू में अपना मुँह सुजा रखता है। अब कोई बिना समझ वाली बात करता है तो किसको हँसी आएगी। कुछ लोगों को आती होगी, लेकिन मुझको तो नहीं आती। जब कोई गिरता है तब भी कई लोगों को हँसी आती है। लेकिन भई मेरा मुँह इस बात पर बिलकुल नहीं हँसता।

कशिश कमारी, नौवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

जब हम खुश होते हैं या किन्हीं मज़ेदार चीज़ों को देखते हैं, तो हँसी अपने आप आ जाती है। हँसी हमारे शरीर में तनाव को कम करती है और मन को हल्का करती है। कभी-कभी ह्यूमर का असर ऐसा होता है कि वह हमें हँसने के लिए प्रेरित करता है कुछ चीज़ें हमारे दिमाग में इसी तरह प्रतिक्रिया देती हैं कि हम अनजाने में ही हँस पड़ते हैं।

नील, छठवीं, कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

जब हमारी मम्मी हॉस्टल में मिलने आती हैं और हमारी ज़रुरत की सारी चीज़ें ले आती हैं तो हम खुश होते हैं और हँसते हैं। हमारे हॉस्टल की दीदी कहती हैं कि अगर नहीं हँसेंगे तो जल्दी बूढ़े हो जाएँगे। इसलिए हमें हँसते रहना चाहिए और दूसरों को भी हँसाते रहना चाहिए।

साकेत रंजन, आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

हँसी छूटती है क्योंकि जब मन के भाव शब्दों में नहीं ढलते, तो आत्मा मुस्कराकर अपनी बात कह देती है—कभी खुशी में, कभी आश्चर्य में और कभी-कभी दर्द छुपाने के लिए भी।

उसे भूत बने बमुशिक्ल दस मिनट हुए थे। इधर उसकी साइकिल डिवाइडर से टकराई, उधर सट्ट से वो भूत बन गया। भूत बनते ही सबसे पहले वो शरीर और कपड़ों के भार से मुक्त हुआ।

आह, इतना हल्का! वो देर तक इधर-उधर लहराता रहा। फिर वो उस नीम की छत पर लेट गया जिसके नीचे वो खेलता था। उसने नीचे देखा। वाह! क्या बढ़िया दिख रहा था। जैसे दसवें माले की बिल्डिंग से दिखता होगा – छोटा-छोटा, दूर-दूर। उसे पेड़ पर फँसी कुछ पतंगे दिखीं। एक गेंद भी। वो पतंग के पास से तेज़ी-से गुज़रा। कुछ हलचल हुई। और पतंग लहराती हुई नीचे जाने लगी। कोई और रोज़ होता तो वो भागकर पतंग लूट लेता। पर आज नहीं। अब से नहीं। अब वो भूत है।

वो अपने स्कूल के मैदान के ऊपर से उड़ा। मैदान खाली था। अभी सुबह हुई ही थी। बच्चे आते होंगे।

उसे अपने दोस्त जानू की याद आई। भूत जानू को दुखी नहीं देख सकता था। जानू को उसके मरने की खबर किसी से मिले इससे पहले वो उस तक पहुँच जाना चाहता था। वो उसको बता देना चाहता था कि वो अब भूत बन गया है। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं। वो अब भी मिल सकते हैं। बस, पहले की तरह नहीं। पर कोई तरीका ढूँढ ही लेंगे। वो उसके घर की ओर उड़ चला।

भूत बनने का अब तक का सबसे बड़ा फायदा उसे यह ही नज़र आया था। झट यहाँ, झट वहाँ। उसे याद आया कि कितनी जगहें देखनी बाकी रह गई थीं। कच्छ, भूटान, इस्तान्बुल, कश्मीर, दार्जिलिंग... मन ही मन लिस्ट बनाता वो जानू के आँगन तक पहुँच गया। जानू अभी उठा ही था। खुले आँगन में ब्रश कर रहा था। भूत सीधे वॉशबेसिन के शीशे के आगे आ गया। जानू को शीशा धुँधला लगने लगा। उसने हाथ से उसे पोंछा। शीशा अब भी धुँधला था। उसने अपनी आँखें मर्लीं। आँख का कीचड़ साफ किया। शीशा अब भी धुँधला रहा। भूत को मज़ा आने लगा था।

अचानक आँगन के गेट की साँकल बजी। साँकल लगातार बज रही थी। जानू ने फटाफट कुल्ला किया। और “अरे! क्या आफत है?” कहते हुए कुण्डी खोलने के लिए दौड़ा।

शशि सबलोक

चित्र: तवीशा सिंह

भूत





“अरे! बाप रे... क्या करने आया था और किसमें लग गया। कैसे रोकूँ जानू को। कैसे अपने भूत बनने की बात बताऊँ!” यह सोचते हुए भूत तेज़ी-से उड़ा। पर तब तक देर हो चुकी थी।

जानू गेट खोल चुका था। उसे दोस्तों से खबर लग चुकी थी। वो रोने लगा। दोस्तों से लिपटकर दहाड़े मारने लगा। सारे दोस्त दुखी थे। भूत का मन जानू के साथ रोने को किया। उसे चुप कराने का किया। पर तभी बंटी ने जानू को अपनी साइकिल पर बैठाया। बाकी सारों ने भी साइकिलें उठाई और जीतू के घर की ओर चल दिए।

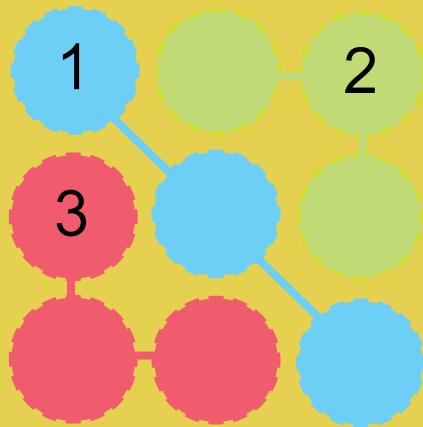
भूत उनके ऊपर-ऊपर था। जीतू के घर का माहौल और गमगीन था। अर्थी सज चुकी थी। मोहल्ले वाले जमा हो गए थे। लोबान, धूप जल रही थी। माँ दहाड़े मारकर रो रही थीं। “जीतू बेटा, लौट आ। लौट आ मेरे बेटे।” जीतू माँ से लिपट गया। छोटी बहन “भैया-भैया!” कर रही थी। पिता कोने में उसकी साइकिल के पास खड़े थे। उस सीट पर हाथ फेर रहे थे जहाँ थोड़ी देर पहले वो बैठा था। वे चुप थे। एकदम सूखी आँखें लिए। भूत का मन किया कि पिता रो दें।

तभी अर्थी उठी। चीखें और तेज़ हो गईं। बंटी जिससे उसकी दो साल से बोलचाल नहीं थी, वो भी बिलख रहा था।

भूत से यह सब देखा नहीं गया। वो सोचने लगा कि अगर भूत के पास दिल रहना ही था, तो भूत बनने का कोई फायदा नहीं।



1. समान रंग के गोलों में 1 से 3 तीन तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि किसी भी पंक्ति या कॉलम में कोई भी संख्या दुबारा न आए।



5. नीचे कुछ क्लू दिए गए हैं। इनके आधार पर ताले का कोड पता करो।

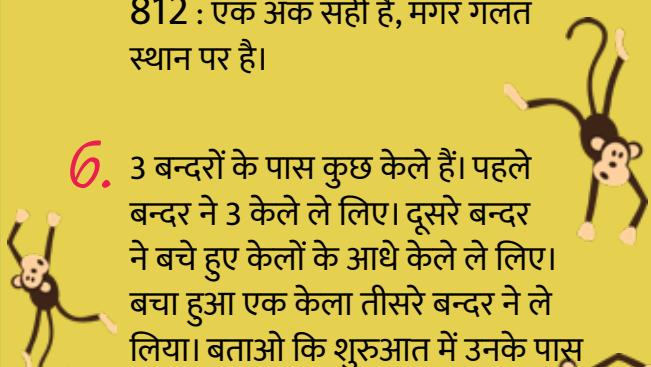
865 : एक अंक सही है और सही स्थान पर है।

964 : एक अंक सही है, मगर गलत स्थान पर है।

981 : कोई भी अंक सही नहीं है।

548 : दो अंक सही हैं, मगर गलत स्थानों पर हैं।

812 : एक अंक सही है, मगर गलत स्थान पर है।



6. 3 बन्दरों के पास कुछ केले हैं। पहले बन्दर ने 3 केले ले लिए। दूसरे बन्दर ने बचे हुए केलों के आधे केले ले लिए। बचा हुआ एक केला तीसरे बन्दर ने ले लिया। बताओ कि शुरुआत में उनके पास कितने केले थे?

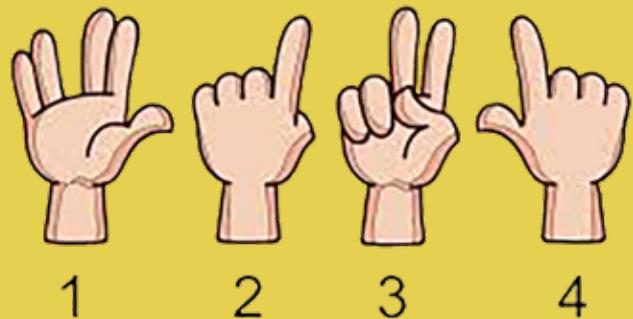
7.

दी गई ग्रिड में कई सारे शहरों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

2. एक व्यक्ति को मौत की सजा सुनाई गई। जज ने उससे पूछा कि तुम किस तरह मरना पसन्द करोगे, बताओ। उसने कुछ ऐसा जवाब दिया कि जज ने उसे माफ कर दिया। उसने क्या जवाब दिया होगा?

3. अर्शबीर के पास 10 काले, 8 सफेद और 6 नीले रंग के मो़जे हैं। कमरे में एकदम अँधेरा है और अर्शबीर को देर भी हो रही है। ऐसे में बिना देखे मो़जों की कम से कम एक जोड़ी पाने के लिए उसे कितने मो़जे उठाने चाहिए?

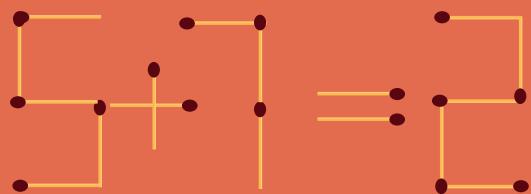
4. इनमें से कौन-सा चित्र अलग है, और क्यों?



ग	या	सू	अ	शि	इ	ब	ली	म
इं	द्वै	र	मृ	लां	पी	क्स	रे	ना
फा	आ	त	त	ग	य	र	ना	ली
ल	स	झाँ	भो	अ	ज	मे	र	ठ
हि	न	सी	सु	पा	ब	दे	ले	ह
सा	सो	फा	मी	गु	ल	म	र्ग	ख
र	ल	गो	री	वा	पु	री	थु	जु
ल	ख	न	ऊ	हा	र	गे	नी	रा
क	च्छ	जि	पा	टी	ना	लं	दा	हो

आथा पच्ची

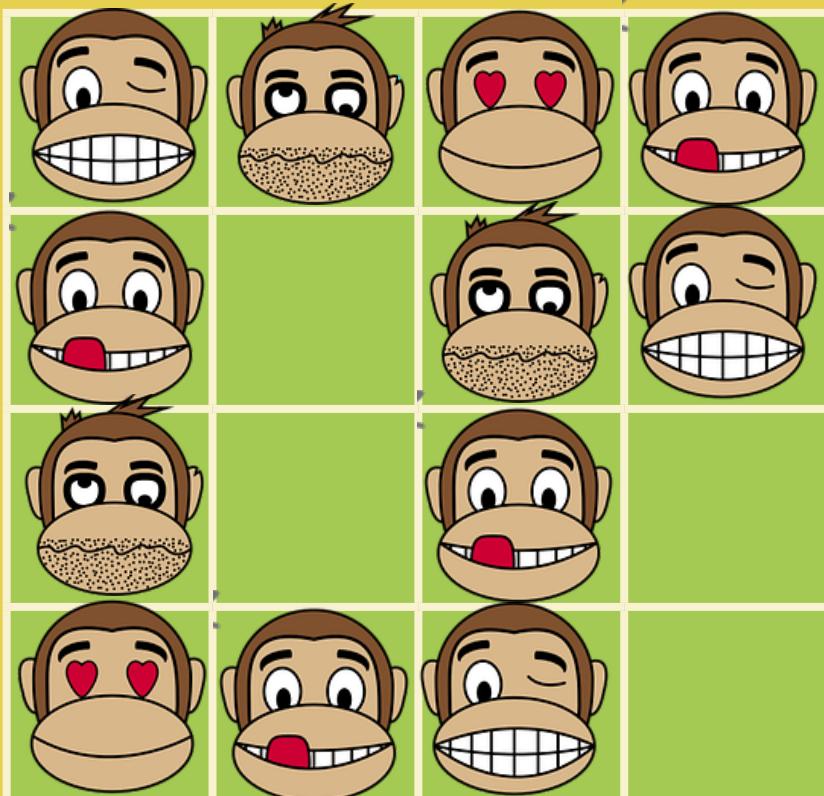
8. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करना है, कैसे करोगे?



9. इन सारी संख्याओं के बीच तुम्हें 1 को ढूँढ़ना है।



10. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बन्दर आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से बन्दर आएंगे?



फटाफट बताओ

मेरे बिना हो चक्का जास
पानी जैसी चीज़ हूँ मैं,
जल्दी बताओ मेरा नाम
(लड़ियाँ)

वह क्या है जो कभी
किसी के लिए नहीं
रुकता?

(इमार)

सब मुझे कपड़े देकर जाते हैं,
पर मैं उन्हें पहन नहीं सकता।
बताओ मैं कौन हूँ?

(मैंक)

यह तीनों पहेलियाँ मध्य प्रदेश के भोपाल ज़िले के अंकुर स्कूल की दसवीं कक्षा के छात्र अनिकेत सेन ने भेजी हैं।

सीधा-सादा रास्ता
बीच में गड़ा
चार शिकारी, एक कबूतर
(आंग प्रीट टिक्किंग)

एक प्लेट में 12
रसगुल्ले, 3 चम्च

(छिप)

यह दोनों पहेलियाँ दिल्ली की निरन्तर संस्था से अलफिया ने भेजी हैं।

जवाब पेज 42 पर

बहन का जन्म

अंजीत रोकाया

तीसरी

विद्या विकास हाई स्कूल

बेंगलुरु, कर्नाटका

मेरी बहन का नाम अनुष्का है। मैं पाँच साल का था जब वह पैदा हुई। उसका जन्म घर पर ही हुआ। मेरी मामी ने उसकी डिलीवरी की। मम्मी बहुत रो रही थीं। मुझे उन्हें रोते देख रोना आ रहा था। लेकिन मैं बहादुर बना रहा। बाहर आने पर मामी ने अनुष्का को गोद में लिया। अनुष्का छोटी और गोरी दिख रही थी। उसके पेट में एक लम्बी पाइप लगी थी। उसे मामी ने ब्लेड से काट दिया। यह देख मेरी रोकी हुई रुलाई छूट गई। मुझे लगा अनुष्का को कुछ हो जाएगा। मुझे मामी पर बहुत गुस्सा आया। मेरे आँसू रुक ही नहीं रहे थे। मम्मी ने मुझे चुप होने का इशारा किया। पापा ने भी कहा कि बहन को कुछ नहीं होगा। मैंने अपनी शर्ट से आँसू पोंछे।

अनुष्का को सच में कुछ नहीं हुआ। अब वह दो साल की हो गई है।



दोस्त

भूपेन्द्र कौर

आठवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल

नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

सबके लिए क्लास का मतलब अलग-अलग होता है। किसी के लिए क्लास का मतलब दोस्त होता होगा या किसी के लिए पढ़ाई। आज मैं आपको बताती हूँ कि मेरे लिए क्लास का मतलब क्या है। मैं जब इस स्कूल में आई थी तो मैंने सोचा था कि मैं दोस्त बनाऊँगी। लॉकडाउन तक तो सब सही था। लेकिन लॉकडाउन के बाद एक लम्बी-सी लड़की ने सबके सामने मेरी बुराई करके मेरे जितने भी दोस्त बने थे, उन सबको मुझसे दूर कर दिया।

जब सर पढ़ाते हैं, तो वह लम्बी-सी लड़की मेरे दोस्तों के साथ बैठकर हँस रही होती है। उनके साथ बातें कर रही होती है। पूरी क्लास में सब दोस्तों के साथ बैठे होते हैं। पर मैं अकेली बैंच पर बैठी पूरी क्लास को देखती रहती हूँ। मेरे दोस्त मुझसे लंच टाइम में ही बोलते हैं। वह लम्बी-सी लड़की टॉफी, चॉकलेट चुपके-चुपके मेरे दोस्तों के साथ खाती है। और अगर मैं देख लूँ तो मुँह पीछे कर लेती है। वह हमेशा मेरे मार्क्स पूछती है। अगर मेरे मार्क्स ज्यादा आएँ तो



चित्र: निशा पैकरा, छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला,
परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

चुप हो जाती है। और अगर मेरे मार्क्स कम आएँ तो खुद को टॉपर समझती है।

सबके लिए क्लास एक दोस्तों से भरी खुशनुमा जगह होती है। पर मेरे लिए क्लास एक खाली कमरा है जहाँ मैं अकेली बैठी हूँ और टीचर पढ़ा रहे हैं। वह लड़की हमेशा मुझे नीचा दिखाती है। मेरे को लगता है कि क्लास में जो सबसे मासूम लगता है, वही शैतान होता है। मैं क्लास में किसी से कुछ भी माँगूँ, अगर वह चीज़ सामने भी पड़ी होगी तो फिर भी वह नहीं देते हैं। मैं उस लड़की का नाम तो नहीं लूँगी। पर मेरी दिल की एक बात ज़रूर निकली है। उम्मीद है कि अगले साल वह स्कूल छोड़कर चली जाएगी। और मैं दोस्त बना पाऊँगी।

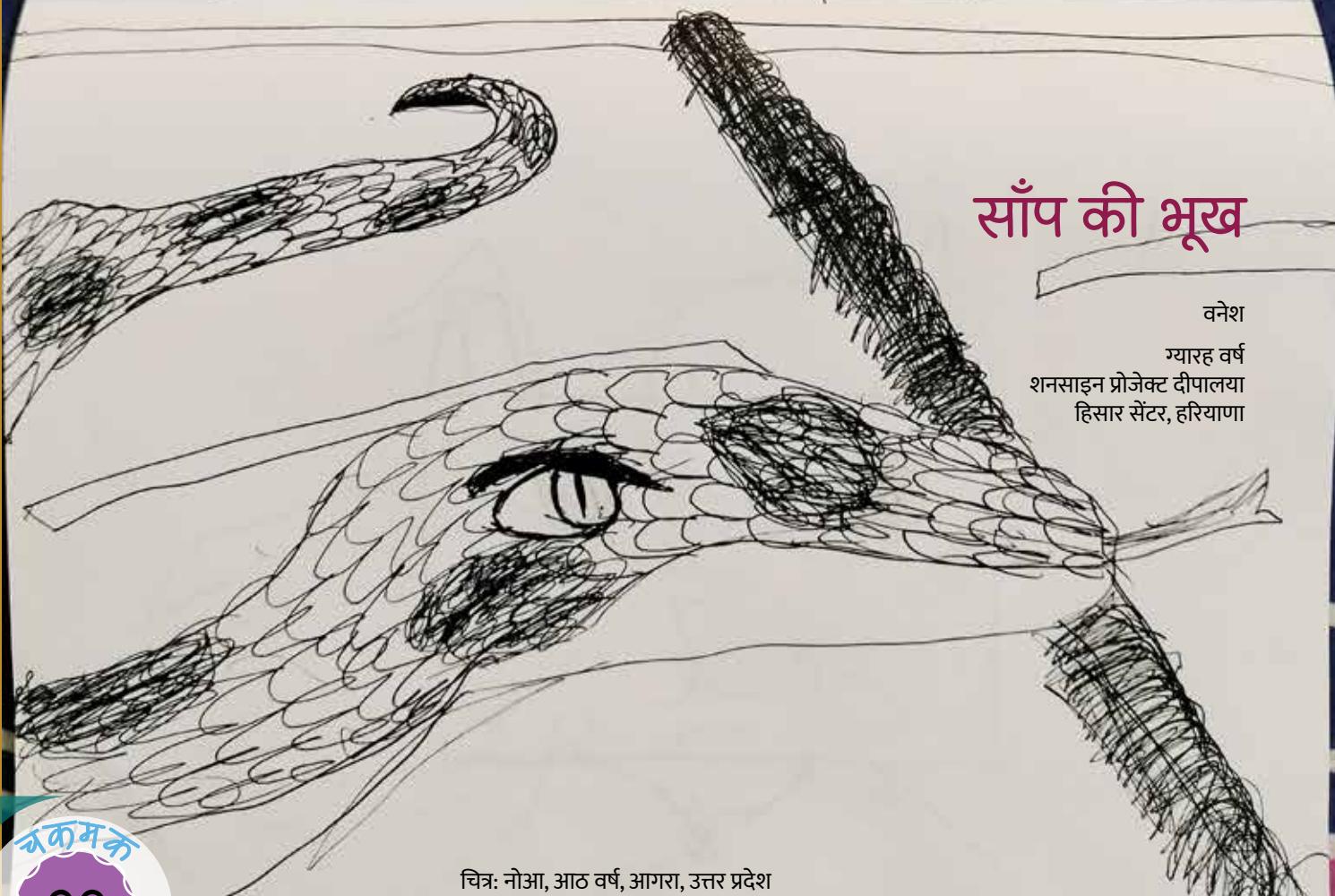
एक बार एक साँप था। वह जंगल में रहता था। एक दिन उसे भूख लग गई। आसपास व जंगल में कहीं भी खाना न मिलने पर उसने सोचा कि पास वाले जंगल में जाएँ और खाना ढूँढ़कर लाएँ। फिर वह गाँव में चला गया। उसने एक लड़की को देखा। उसने सोचा कि लड़की को डस लें। जैसे ही साँप ने लड़की को डसने के लिए उसका पीछा किया, लड़की ने उसे देख लिया। वह चिल्लाने लगी, “देखो, साँप-साँपा!” फिर साँप ने सोचा, “मैं यहाँ से चला जाता हूँ। नहीं तो गाँववाले इकट्ठा होकर मुझे मार देंगे”



साँप की भूख

वनेश

ज्यारह वर्ष
शनसाइन प्रोजेक्ट दीपालया
हिसार सेंटर, हरियाणा



चित्र: नोआ, आठ वर्ष, आगरा, उत्तर प्रदेश



चित्र: अंजलि सिंह, सातवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीगढ़

सुनो गप्प!

उवैश

तितली समूह
दिग्नन्तर विद्यालय
भावगढ़, जयपुर
राजस्थान

एक दिन मैं मस्जिद में पढ़ते-पढ़ते ही सो गया। जैसे ही हाफिज साहब ने मुझे देखा वह मेरे ऊपर बहुत तेज़ चिल्लाए। उनके चिल्लाने की आवाज़ से मैं मस्जिद के ऊपर छत पर पहुँच गया। मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं वापस नीचे नहीं आना चाहता था। मैंने देखा कि मस्जिद के ऊपर से एक हेलीकॉप्टर उड़ रहा था। मैं उसको पकड़कर उसी के साथ लटक गया और थोड़ी देर हवा में धूमने का मज़ा लेता रहा। फिर मैंने सोचा कि जब मैं ऊपर उड़ ही रहा हूँ तो क्यों नहीं अपने दादा-दादी से ही मिल आऊँ।

मैं हेलीकॉप्टर से लटके-लटके ही दौसा पहुँच गया। वहाँ हमारे घर की छत पर उतर गया। फिर अपने दादा-दादी से मिल लिया। दादा-दादी ने मुझे बहुत सारी चीज़ें खिलाई। अब मुझे मम्मी-पापा की याद आने लगी थी। तो मैंने सोचा कि अब वापस घर कैसे जाऊँ?

मैं घर की छत पर पहुँच गया। वहाँ से एक चिड़िया उड़ रही थी। मैंने उससे रिक्वेस्ट की कि वह मुझे भी साथ ले चले। चिड़िया ने मुझे अपने पंखों पर बिठाया और मेरे घर लाकर छोड़ दिया। मैंने चिड़िया को बहुत धन्यवाद दिया। उसने मुझे समय से घर पहुँचा दिया और मुझे अपनी मम्मी की डॉट से बचा लिया।

मानापारा

रंजना मिंज
पाँचवीं, प्राथमिक शाला मानापारा
सरगुजा, छत्तीसगढ़

मैं मानापारा में रहती हूँ। मैं अपने गाँव के स्कूल में ही पढ़ने जाती हूँ। मेरे स्कूल का नाम प्राथमिक शाला मानापारा है। मेरे गाँव में 2 हैंडपम्प हैं। गाँव की सारी औरतें इन्हीं दो हैंडपम्प से पानी भरती हैं। नल भी है। लेकिन नल से पानी नहीं निकलता है। किसी-किसी के घर में बोर है। तो वे बोर से ही पानी भर लेते हैं। गाँव में एक तालाब भी है। उस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं। उस तालाब में कमल का फूल भी है। गाँव में मेरे बहुत सारे दोस्त हैं।



चित्र: अरविंश, दृष्टि, अंजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

गजराज होटल

साहिल कुमार मिंज
पाँचवीं
प्राथमिक विद्यालय मानापारा
सरगुजा, छत्तीसगढ़

एक बार की बात है। एक जंगल में एक हाथी रहता था। वह जंगल में रहकर बोर हो गया था। उसने एक दिन शहर की ओर जाने की सोची। वह नहा-धोकर, कानों में झुमके पहनकर, पैरों में चप्पल पहनकर और सुन्दर चादर ओढ़कर निकल पड़ा। उसे रास्ते में एक पुल मिला जो बहुत ही कमज़ोर था। वह डरते हुए उस पर चलकर पार हुआ। अन्त में वह शहर पहुँच गया। उसने अपने लिए बाज़ार से गेंद और बहुत सारे खिलौने खरीदे। उसने सुन्दर चूड़ी भी खरीदीं।

घर पहुँचने से पहले उसने कुछ खाना चाहा। उसकी नज़र गजराज होटल पर पड़ी। होटल जाकर हाथी जैसे ही कुर्सी पर बैठा कुर्सी टूट गई। हाथी गिर गया। गिरने से उसका बहुत सारा सामान बिखर गया। चूड़ी भी टूट गई। चप्पल भी टूट गई। हाथी शर्म के मारे दौड़े-दौड़े जंगल की ओर भाग गया।

राजा और शेर

आयुषी बुन्देला
पाँचवीं
शासकीय प्राथमिक
विद्यालय बेंकपुरा,
महगाँव, धार, मध्य प्रदेश

एक राजा था। वो एक गाँव में रहता था। उसके घर के पास एक कुओँ था। उसके पास शेर भी था। और पास में पहाड़ था। राजा शेर को बहुत प्यार करता था। पर एक दिन शेर कुएँ में गिर गया। फिर शेर ने बहुत ज़ोर-से आवाज़ लगाई। राजा दौड़ते हुए आया। उसने गाँव के सभी लोगों को आवाज़ लगाई। गाँव के सब लोग राजा का कहना मानते थे। इसलिए सब लोग राजा के कुएँ में गिर गए। फिर सब लोगों ने मिलकर राजा के शेर को निकाल दिया। राजा की आँखों में आँसू आ गए। यह देखकर शेर की आँखों में भी आँसू आ गए।



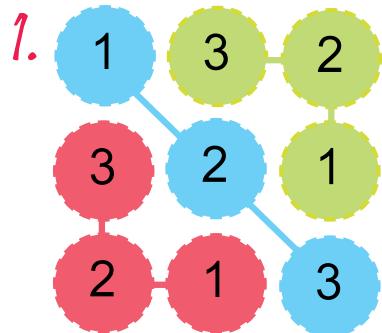
चित्र: दिशा भुइया, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक दिन मैं और अनुराग भैया स्कूल जा रहे थे। तो हमें नदी में एक मछली दिखी। वह बहुत बड़ी थी। उसे खून निकल रहा था। शायद उसे चोट लगी थी। वह तैर नहीं पा रही थी। मैंने और अनुराग ने खाखरे के पत्ते से खून साफ किया। फिर हमने उसका नाम गुलाबो रखा। गुलाबो को हमने नदी में छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद मुझे फिर से गुलाबो दिखी। अब वह खूब अच्छे-से तैर रही थी।

गुलाबो मछली

सरस सिटोले
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय
गुलाबड़, झिरन्या, खरगोन, मध्य प्रदेश

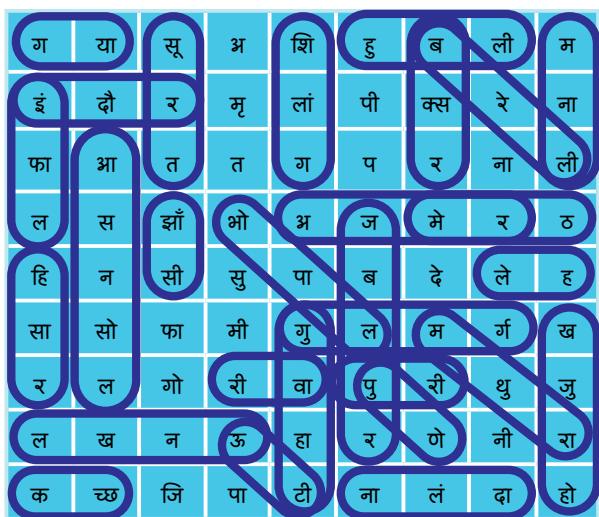
काथा पर्दी जवाब



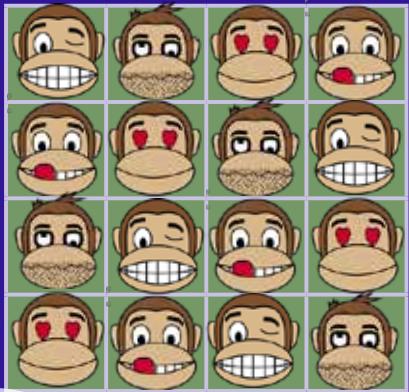
5.

कलू 3 के हिसाब से अंक 8, 9 व 1 सही नहीं है। इसलिए पहले कलू में 6 या 5 ही सही अंक हो सकते हैं। पहले व दूसरे कलू में अंक 6 समान स्थान पर है। इसलिए 6 सही अंक नहीं हो सकता। तो कलू 1 व 2 व 4 के हिसाब से 4 व 5 सही अंक हुए। कलू 5 के अनुसार 2 सही अंक है। इसलिए ताले का कोड 425 होगा।

7.



10.



क्रमक्र

42

मई 2025

2. उसने कहा कि वह बूढ़ा होकर मरना चाहता है।

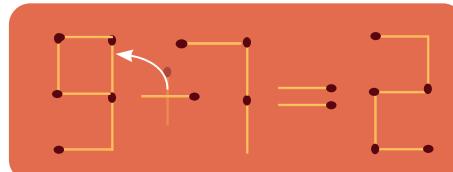
3. चूँकि उसके पास केवल 3 रंग के ही मो़जे हैं, इसलिए 4 मो़जे उठाने पर हर हाल में दो मो़जे एक ही रंग के होंगे।

4. 2 नम्बर वाला चित्र बाएँ हाथ का है, बाकी सारे दाएँ हाथ के हैं।

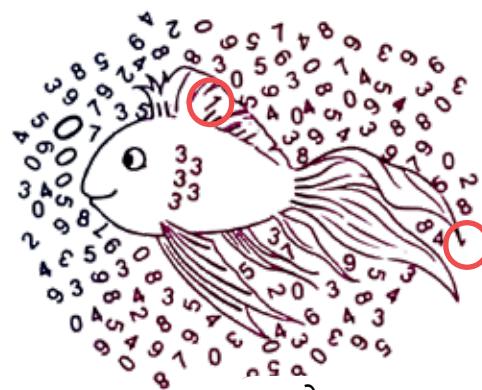
6.

मान लो कि शुरू में बन्दरों के पास x केले�े। पहले बन्दर ने 3 केले ले लिए, तो केले बचे $x - 3$ दूसरे बन्दर ने बचे हुए केलों के आधे ले लिए, यानी $\frac{1}{2}(x - 3)$ इसके बाद बचे केले = $(x - 3) - \frac{1}{2}(x - 3) = \frac{1}{2}(x - 3)$ बचा हुआ 1 केला तीसरे बन्दर ने ले लिया, यानी $\frac{1}{2}(x - 3) = 1$ तो $x - 3 = 2 \Rightarrow x = 5$ । इसलिए शुरुआत में 5 केले थे।

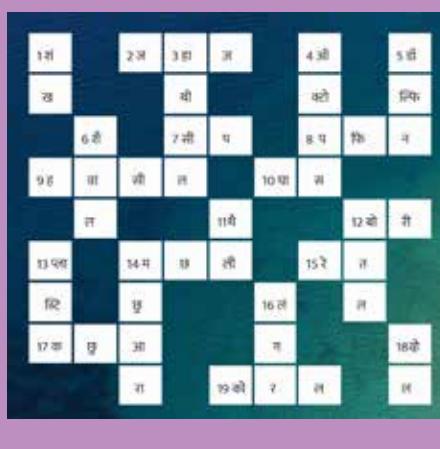
8.



9.



सुडोकू-84 का जवाब



9	4	8	1	7	5	2	6	3
2	7	6	8	9	3	4	5	1
3	1	5	2	6	4	9	7	8
1	8	3	5	4	2	6	9	7
4	2	9	6	1	7	3	8	5
6	5	7	9	3	8	1	2	4
5	9	1	3	8	6	7	4	2
7	6	2	4	5	1	8	3	9
8	3	4	7	2	9	5	1	6

मई 2025

तुम भी जानो



विश्व संगीत दिवस

21 जून उत्तरी गोलार्ध का सिर्फ सबसे लम्बा दिन ही नहीं है। इस दिन विश्व संगीत दिवस (World Music Day) भी मनाया जाता है। इसे 'फेट द ला म्यूज़िक' के नाम से भी जाना जाता है। इसकी शुरुआत फ्रांस में हुई और फिर सीमाओं को लाँघकर अब दुनिया भर में इसे मनाया जाता है। इस दिन सार्वजनिक स्थानों में संगीत-गोष्ठियाँ होती हैं, जिनमें कोई भी बिना टिकट के संगीत का आनन्द ले सकता है। कुछ लोग इस दिन गाना या कोई साज़ बजाना भी सीखते हैं। किसी एक खास शैली नहीं बल्कि विविध संगीत को सुनने-सुनाने का दिन है ये – चाहे वो फिल्मी गीत हों, लोक संगीत हो, शास्त्रीय संगीत हो या फिर कोई विदेशी शैली। इस दिन को तुम कैसे मनाना चाहोगे?



पेड़ों पर बिजली का गिरना उन्हें खत्म कर सकता है – यह बात तो अमूमन सबको पता है। लेकिन हाल ही में एक ऐसी किस्म का पेड़ पता चला है जो बिजली गिरने पर मरता नहीं, बल्कि फलता-फूलता है। डिप्टैरिक्स ओलीफेरा नाम का यह पेड़ अमेझॉन के जंगलों में पाया जाता है। यह आसपास के अन्य पेड़ों से लम्बा और चौड़ा होता है। जब बिजली गिरती है तो उसे

बिजली से डरता नहीं,
खिल उठता है यह पेड़

यह आकर्षित करता है। हैरानी की बात है कि बिजली गिरने के बाद भी यह खुद तो सुरक्षित रहता है। लेकिन इसके ऊपर उर्गीं परजीवी लताएँ और आसपास के पेड़ अक्सर खत्म हो जाते हैं। एक बार तो आसपास के 57 पेड़ बिजली गिरने से मर गए। लेकिन यह सलामत रहा। बिजली का गिरना यह पेड़ कैसे सह पाता है इसकी जाँच जारी है।



ब्रकमक

43

मई 2025

एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों

इन्हें इंशा

चित्र: हबीब अली

एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों
एक मेले में पहुँचा हुमकता हुआ
जी मचलता था हर इक शय पे मगर
जेब खाली थी, कुछ मोल न ले सका
लौट आया, लिए हसरतें सैंकड़ों
एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों
खैर मेहरुमिओ¹ के वोह दिन तो गए
आज मेला लगा है उसी शान से
जी मैं आता है इक-इक दुकान मोल लूँ
जो मैं चाहूँ तो सारा जहाँ मोल लूँ
ना-रसाई² का अब जी मैं धड़का कठाँ
पर वोह छोटा-सा अल्हड़-सा लड़का कठाँ?

-
- 1 नाकामियों
2 ना पा सकना